Title : Discussion regarding India?s preparedness for upcoming Olympic Games (Inconclusive)

डॉ. संजय जायसवाल (पश्चिम चम्पारण) : महोदय, आपने ओलम्पिक खेलों में भारत की तैयारी पर नियम 193 के तहत चर्चा पर आपने अनुमति दी है। इसके लिए मैं ही नहीं अपितु पूरा देश आपका आभार व्यक्त करता है।

महोदय, हम अपने विरोधी दलों की पीड़ा को भी समझ सकते हैं। हम लोगों ने पहले भी देखा है कि पिछले पांच वर्ष के आपके अध्यक्ष के कार्यकाल में कई बार खेलों को लेकर चर्चा हुई है और उसमें खेलो को कैसे प्रोत्साहित किया जाए, कैसे ?फिट इंडिया? और ?खेलो इंडिया? की चर्चा की जाए? कैसे हम अपने खिलाड़ियों को ज्यादा से ज्यादा सुविधाएं प्रदान कर सकें? कैसे हम पदक जीत सकें? इस सबकी चर्चा करके हम संसद के माध्यम से अपने खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करने का काम करते हैं। हमारे विरोधियों को बिलकुल ही नहीं लगेगा कि इस तरह की चर्चा आवश्यक है।

महोदय, हमने वर्ष 2009 में भी चर्चा देखी है। वर्ष 2009 में मैं जब पहली बार सांसद बना था। कॉमनवैल्थ गेम्स के समय मैंने देखा, प्रेमचन्द्रन जी भी थे, उस समय जो चर्चा यह करते थे, वह आज भी कर रहे हैं। मैं कॉमनवैल्थ गेम्स को याद नहीं करना चाहूंगा। पिछले 50 वर्षों से हम लोग ओलम्पिक खेलों को फॉलो करते हैं। विगत वर्षों में ओलम्पिक खेलों की तैयारियों के लिए किसी तरह का जोर नहीं दिया जाता था और उस तरह से कार्य भी नहीं होते थे। ओलम्पिक का मतलब होता था कि हम पदक जीते हैं या नहीं जीते हैं। इसके अलावा ओलम्पियन बन जाना ही इस देश के एथलीट्स की उपलब्धि होती थी । हम दूसरे खेलों पर चर्चा तक नहीं कर पाते थे। लेकिन आज भारत के प्रधान मंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में देश में एक उत्साह और उमंग के साथ हमारे एनडीए के पहले बजट में स्पोर्ट्स के लिए 1219 करोड़ रुपये रखे गए थे। विगत दस वर्षों में 3397 करोड़ रुपये का बजट स्पोर्ट्स के लिए रखा है। इसके लिए हम माननीय प्रधान मंत्री जी का और केन्द्र सरकार का बहुत-बहुत धन्यवाद और आभार व्यक्त करते हैं।

भविष्य की तैयारी करना, भविष्य की योजनाओं के साथ भविष्य के खिलाड़ियों को निकालना ही किसी भी सरकार और देश का लक्ष्य रहना चाहिए। अगर हम कहें कि आज हम ओलंपिक पर चर्चा क्यों कर रहे हैं, तो ऐसा नहीं है कि एक महीने पहले चर्चा हो रही है और एक महीने में हम पदक जीत कर ले आएं। इसके लिए वर्षों की तपस्या होती है। खिलाड़ियों की बचपन से इसके लिए तैयारियां रहती हैं। उसमें सरकार का प्रोत्साहन होता है। सीएसआर के तहत विभिन्न लोगों का प्रोत्साहन होता है। वे व्यक्ति, जिन्होंने अपना पूरा जीवन ही स्पोर्ट्स के प्रति डेडिकेट किया है, वैसे लोग जब बच्चों को आगे बढ़ाते हैं, तब जाकर हम कहीं ओलंपिक की उस रेखा को पार कर पाते हैं, जिस रेखा को पार करने का आज यह सरकार लगातार प्रयास कर रही है।

हमारा प्रयास है कि हम पोडियम पर अपना स्थान कैसे बनाएं। आज तक इसकी चर्चा कभी भी नहीं होती थी, लेकिन विगत वर्षों में चाहे वह किरेन रिजिजू जी की स्पोर्ट्स मिनिस्ट्री हो, अनुराग ठाकुर जी की हो या मनसुख भाई की हो, हम लोगों ने इस पूरी परंपरा को बदल दिया है। हमारा सारा

ध्यान इस पर रहना चाहिए कि हम पदक कैसे प्राप्त कर सके। उसके लिए हम लोगों ने अपने खिलाड़ियों पर बहुत बड़ा इनवेस्टमेंट करने का काम किया है।

अगर हम इस समय की बात करें तो हमने 470 करोड़ रुपये 16 डिसिप्लिन्स में लगाए हैं। TOPS स्कीम के तहत हमने एक-एक खिलाड़ी की व्यक्तिगत चिंता की है। उसको क्या सुविधाएं मिलनी चाहिए? आज आप बोल रहे हैं कि खिलाड़ी आज गए हैं, लेकिन 80 प्रतिशत खिलाड़ी बहुत पहले यूरोप जा चुके हैं, क्योंकि एक्लेमेटाइजेशन भी खिलाड़ियों के लिए एक बहुत बड़ा इश्यू होता है कि वह उस वातावरण के लिए तैयार रहे। उसके लिए सभी खिलाड़ियों को लगातार यूरोप में भेजकर लगातार तैयारी करवाने का काम यह सरकार कर रही है।

इतना ही नहीं, सरकार ने चाहे नीरज चौपड़ा हों, मनिका बत्रा हों या पी.वी. सिंधु हों इस तरह से अनेक खिलाड़ियों पर तथा नीरज चौपड़ा दोबारा इतिहास बना सके, उसके लिए 5.72 करोड़ रुपये की केन्द्र सरकार द्वारा मदद की जा रही है। उसी प्रकार से हमने इंडियन मेन हॉकी के लिए भी 41.81 करोड़ रुपये की राशि दी है। यह सब बिल्कुल ही नए ढंग से, नए वातावरण में हो रहा है। खिलाड़ी ज्यादा से ज्यादा फोकस रख सकें, ज्यादा से ज्यादा वे अपने खेल पर ध्यान रख सकें और उनके साथ दूसरी चीजों की जो चिंता है, चाहे वह फीजियोथेरेपिस्ट की हो, डॉक्टर की हो, फूड की हो, हर विभाग के बारे में उसके स्पेशलिस्ट से लेकर और उनके साथ खिलाडियों को तैयार करवाने का जो कार्य सरकार कर रही है, उसके लिए हम सरकार को बहुत-बहुत धन्यवाद देते हैं।

खिलाड़ी के लिए केवल खेल के प्रति आगे बढ़ना और उसकी मेहनत ही काफी नहीं होती है। पहले यू.एस. या रूस को जो पदक मिलते थे, उसका कारण यह था कि पूरे कम्प्यूटराइजेशन से लेकर, मैकेनिकल, इलेक्ट्रानिक हर तरह से उन लोगों की प्रिपरेशन में मदद की जाती थी। आज यह सरकार इस काम को भी कर रही है। हमने ट्रेनिंग फैसिलिटी को भी विश्वस्तरीय बनाने का काम किया है, जिससे हमारे खिलाड़ियों को ज्यादा से ज्यादा सुविधा मिल सके। पहली बार हुआ है कि माननीय प्रधान मंत्री मोदी जी के कार्यकाल में वर्ष 2014 के बाद से हम इंटरनेशनल कोचेस को हायर कर रहे हैं। दुनिया के जो सबसे बेस्ट कोचेस हैं और कोई खिलाड़ी इच्छा जाहिर करता है कि हमें इस देश के इन्हीं कोच से अपनी ट्रेनिंग लेनी है तो यह सरकार उस हिसाब से उस खिलाड़ी को ट्रेनिंग देने के लिए कृतसंकल्पित है। उनको उनके पसंद के कोचेस के साथ, उनके पसंद के न्यूट्रिशनिस्ट के साथ उस तरह की हर सुविधा को देने का कार्य यह सरकार कर रही है।

केवल इस पेरिस ओलंपिक की ही बात नहीं है, आगामी ओलपिंक्स की तैयारी के लिए भी सरकार खिलाड़ियों को मदद कर रही है। उनका इंटरनेशनल एक्सपोजर लगातार बना रहे तथा वे विश्व में जहां जाना चाहे, खेलना चाहे तथा वहां पर ट्रेनिंग कर सके और हम उनकी हर तरह से मदद कर सके, उसकी भी चिंता की जा रही है। साथ ही मैं सरकार को धन्यवाद देना चाहूंगा कि उसने इस बार ?खेलो इंडिया? का बजट 1 हजार 45 करोड़ रुपये का दिया है।

जो कभी पूरे इस देश के खेल का बजट नहीं होता था, उतना बजट सिर्फ ?खेलो इंडिया? में दिया गया ताकि नए बच्चे तैयारी कर सकें, ओलंपिक में जा सकें एवं मेडल जीत सकें। अगले आठ वर्षों में, अगले 12 वर्षों में, अगले 16 वर्षों में हमारे कौन-से बच्चे आगे बढ़ सकते हैं, उनको आज से ही प्रोत्साहित करने का काम माननीय प्रधान मंत्री जी के नेतृत्व में यह सरकार कर रही है। उसी का यह नतीजा है कि पिछली बार टोक्यो ओलंपिक में हम रिकॉर्ड सात गोल्ड मेडल्स जीत सके। मुझे पूरा विश्वास है कि पूरा संसद दिल से चाहता है कि इस बार हम पहली

बार 10 का आंकड़ा पार करें। हमारे खिलाड़ी इतिहास बनाने का काम करें। इसके लिए संसद के सभी माननीय सांसदों की सदभावना, हम सभी की शुभकामनाएं उन सभी के साथ है।

हम केवल आगामी ओलंपिक की तैयारी नहीं कर रहे हैं। यह पहली बार है कि यह देश वर्ष 2036 में होस्ट करने की भी तैयारी कर रहा है। मैं माननीय प्रधान मंत्री जी के प्रति बहुत-बहुत आभार व्यक्त करता हूं कि पिछले वर्ष आईओसी की बैठक हुई थी, उस समय अनुराग ठाकुर जी मंत्री थे और माननीय प्रधान मंत्री जी ने खुल कर कहा था कि वर्ष 2036 में ओलंपिक को होस्ट करना चाहिए, जो पूरे देश के वातावरण को परिवर्तित करने का काम करेगा। हम उसे हिन्दुस्तान के अहमदाबाद में होस्ट कर सके, उसके लिए आज एक पूरी टीम पेरिस भी गई हुई है। वे पेरिस ओलंपिक के बेस्ट प्रैक्टिसेज को लगातार देखने का काम कर रहे हैं। यह पहली बार है कि अभी ही हम लोगों ने एसओपी बना दिया है।

सरकार ने स्पेशल परपस व्हीकल भी बनाया है कि किस तरह से केन्द्र सरकार और राज्य सरकार मिल कर ओलंपिक होस्ट करें। ओलंपिक होस्ट करने का अर्थ यह होगा कि पूरा देश एक तरह से मेडल जीतने की तैयारी में हो जाएगा। हमने कॉमन वेल्थ गेम्स में बहुत कंट्रोवर्सी देखी है, पर यह भी एक ऐतिहासिक सच्चाई है कि सबसे ज्यादा मेडल्स जीतने का काम भारतीयों ने उस समय किया था। इसलिए हम लोगों को यह काम आगे बढ़ कर करना चाहिए। मैं केन्द्र सरकार के प्रति बहुत-बहुत आभार व्यक्त करता हूं।

मैं माननीय प्रधान मंत्री जी के प्रति बहुत-बहुत आभार व्यक्त करता हूं। हमारे खिलाड़ी कैसे लगातार मेडल्स जीत सकें, इसके लिए उनको एनकरेज करना, उनको अपने साथ बुला कर बैठाना, बातें करना, मेडल्स जीतने पर और मेडल नहीं जीत पाने पर भी उनसे लगातार संपर्क कर उनको प्रोत्साहित करने काम माननीय प्रधान मंत्री जी करते हैं, उसी का नतीजा है कि हम इतनी बड़ी सफलता प्राप्त कर रहे हैं।

मैं आपके प्रति भी आभार व्यक्त करना चाहता हूं कि आगामी ओलंपिक की तैयारियों, जैसे महत्वपूर्ण विषय पर आपने इस सदन में नियम 193 के तहत चर्चा के लिए अनुमति प्रदान की है। इसके लिए मैं आपका बहुत-बहुत धन्यवाद और आभार व्यक्त करता हूं ।

श्री दीपेन्द्र सिंह हुड्डा **(**रोहतक**) :** अध्यक्ष महोदय, ओलंपिक की तैयारी पर चर्चा - यह अतिमहत्वपूर्ण विषय है। यह विषय तो महत्वपूर्ण है, मगर चार दिनों के बाद 26 तारीख को आंलंपिक शुरू होने जा रहे हैं। आज 22 तारीख है, तो अब हम क्या तैयारी पर सुझाव दें और क्या तैयारी हो पाएगी? अब हम केवल शुभकामनाएं दें और सदन केवल दो-चार काम ही कर सकता है। हमारे जो कंटिजेंन्ट्स हैं, उनको हम शुभकामनाएं दे सकते हैं और ईश्वर से प्रार्थना कर सकते हैं कि ज्यादा से ज्यादा मेडल्स आएं। क्या ये वर्ष 2028 की ओलंपिक के लिए सुझाव ले रहे हैं, तब तक तो पता नहीं है कि इनकी सरकार रहेगी या नहीं रहेगी, किसकी सरकार रहेगी? आज यह महत्वपूर्ण विषय है। अभी हमारे अच्छे मित्र संजय जायसवाल जी ने कहा है कि 470 करोड़ रुपए अलग-अलग जो ओलंपिक सेल ? साई में किया गया था, ? (व्यवधान) उसके माध्यम से आवंटित किया गया है।? (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष **:** हुड्डा जी, आप माइक ठीक कर लें।

श्री दीपेन्द्र सिंह हुड्डा **:** 470 करोड़ रुपये आवंटित किए गए हैं, यह अच्छी बात है। यह और भी ज्यादा आवंटित होना चाहिए। विदेशों में कराए जा रहे ट्रेनिंग के बारे में अलग-अलग खेलवार ब्योरा दिया गया है, उस पर मुझे इतना ही कहना है कि इसमें जो आवंटित किया गया है, उसमें हॉकी और रेसलिंग का नम्बर काफी पीछे है।

जबकि ये दो ऐसे खेल हैं, जो न सिर्फ हमारी धरती से जुड़े हुए खेल हैं, बल्कि इन दो खेलों से सबसे ज्यादा मेडल्स आए हैं।

उनका आवंटन ज्यादा किया जाना चाहिए था, उनका आवंटन का नम्बर 9 वें और 10 वें स्थान पर है। यह मैं कहना चाहता हूँ।

अगर हम ओलम्पिक और भारत देश के खेल की बात करें, तो इसमें हरियाणा का संदर्भ न लें, तो यह चर्चा अधूरी होगी। मैं अधूरा इसलिए कह रहा हूँ क्योंकि देश के इतिहास में 35 ओलम्पिक मेडल्स हमारे देश ने अर्जित किये हैं, जिनमें से 23 इंडिविजुअल खेलों के मेडल्स हैं। इन 23 मेडल्स में से 10 मेडल्स, पिछले चार ओलम्पिक में हरियाणा के खिलाड़ी लेकर आए हैं। यानी लगभग 40 में से 2 प्रतिशत वाला हरियाणा, 40 से 50 प्रतिशत ओलम्पिक के मेडल्स और केवल ओलम्पिक ही नहीं, बल्कि एशियाई और कॉमनवेल्थ के मेडल्स में भी हरियाणा की हिस्सेदारी इतनी ही होती है। अभी वे कह रहे थे कि वर्ष 2014 के बाद से खेलों में इतनी बढ़ोतरी हुई, लेकिन अगर हम पिछले चार ओलम्पिक्स में देखें, चारों ओलम्पिक्स में देश के मेडल्स आए और आधे से ज्यादा मेडल्स हरियाणा के खिलाड़ी लेकर आए। वर्ष 2008 में, सबसे पहले ओलम्पिक में तीन मेडल्स आए, जिनमें से 2 मेडल्स देश के लिए हरियाणा के खिलाड़ियों ने अर्जित किये। वर्ष 2012 में 6 मेडल्स आए, जिनमें से 4 मेडल्स हरियाणा के खिलाड़ियों ने अर्जित किए। वर्ष 2016 में 6 से घटकर 2 मेडल्स आए, लेकिन दो में से भी एक मेडल हरियाणा की बेटी साक्षी मलिक लेकर आई। वर्ष 2020 में, 7 मेडल्स आए, जो वर्ष 2012 के लगभग बराबर हैं, जिनमें से 3 मेडल्स हरियाणा के खिलाड़ी लेकर आए।

अगर हम ओलम्पिक में जाने वाले कंटिंजेंट की बात करें, तो पिछले ओलम्पिक के खेलों में 120 खिलाड़ियों में से 31 खिलाड़ी यानी 25 प्रतिशत खिलाड़ी हरियाणा से गये। इस ओलम्पिक में भी 117 में से 24 खिलाड़ी यानी लगभग 21 प्रतिशत खिलाड़ी हरियाणा से जा रहे हैं। नीरज चोपड़ा से लेकर विनेश फोगाट तक, जिन्होंने जंतर-मंतर पर सरकार के खिलाफ धरना दिया है। ये सभी ओलम्पिक के कंटिंजेंट का हिस्सा हैं, जो ओलम्पिक के खेलों में जा रहे हैं।

वर्ष 2006-07 के बाद से जितने भी खेल हुए चाहे वे एशियाई खेल या कॉमनवेल्थ गेम्स हों, मुझे गर्व है कि मैं हरियाणा से आता हूँ, इन सभी खेलों में 50 प्रतिशत तक मेडल्स और 25 प्रतिशत कंटिंजेंट के रूप में देश को रेप्रजेंट करने का अवसर हरियाणा के खिलाड़ियों को मिला। इसलिए जब हम ओलम्पिक की बात करें, तो जैसा कि मैंने कहा कि यह बिना हरियाणा की बात किये अधूरा होगा। ऐसा कौन-सा सिस्टम हरियाणा में बना, जिसकी वजह से आज ओलम्पिक में हरियाणा के खिलाड़ी इतना अच्छा कर पा रहे हैं, उसको जानना चाहिए, क्या ऐसी बातें हैं, जिन्हें देश के अन्य राज्य लेकर जा सकें क्योंकि खेल हमेशा राजनीति से ऊपर होना चाहिए। उसमें अब क्या कमियाँ आ गई हैं, उनके बारे में भी बताना एक जिम्मेदार विपक्ष के रूप में हमारा कर्तव्य है।

मेडल्स तभी आ सकते हैं, जब आप सही प्रतिभा की खोज करें, प्रतिभा को प्रोत्साहन दें, इंफ्रास्ट्रक्चर दें। इंफ्रास्ट्रक्चर के बाद जब कोई मेडल लेकर आए या न आए, कोई चोटिल हो जाए, वह मेहनत करे, लेकिन एक स्तर तक पहुंच जाए, तो उसका भविष्य सुरक्षित किया जाए। खिलाड़ियों के मन से अपने भविष्य की असुरक्षा निकाल दी जाए। इन बातों को ध्यान में रखते हुए, हरियाणा की पूर्ववर्ती कांग्रेस की सरकार ने वर्ष 2004-05 में खेल नीति बनाई थी, जिसे ?पदक लाओ और पद पाओ? की नीति भी कहा गया। इसके तीन पहलू थे। पहला पहलू था कि चाहे आप किसी स्तर तक पहुंचेंगे, चाहे राष्ट्रीय खेलों तक पहुंचें या अंतर्राष्ट्रीय स्तर के खेलों तक आप पहुंचेंगे तो आपके भविष्य को सुरक्षित किया जाएगा। इस नीति के तहत 500 से ज्यादा अलग-अलग पदों

पर खिलाड़ियों की नियुक्ति हरियाणा सरकार ने की। जिसमें डीएसपी लेवल पर चाहे अंतर्राष्ट्रीय पहलवान योगेश्वर दत्त हों, अंतर्राष्ट्रीय मुक्केबाज बिजेन्दर सिंह हों, अंतर्राष्ट्रीय पहलवान बबीता फोगाट हों, इन सभी खिलाड़ियों को डीएसपी से लेकर अन्य पदों पर हरियाणा सरकार द्वारा मौका दिया गया। दुर्भाग्य की बात है कि ?पदक लाओ और पद पाओ? की जो नीति थी, जिसमें नियुक्तियाँ देने की नीति थी, वह पिछले 10 वर्षों से, जब भाजपा की सरकार है, उसने इस नीति पर रोक लगाने का काम किया है।

आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि हमारी खिलाड़ी बेटी साक्षी मलिक को आज तक हरियाणा में कोई नियुक्ति नहीं मिली है। पिछले ओलम्पिक के हमारे खिलाड़ी, मेडल विजेता रवि दहिया और नीरज चोपड़ा को हरियाणा सरकार द्वारा अभी तक कोई नियुक्ति नहीं देने का काम किया गया है।

सर, यह तो डीएसपी और अन्य पदों की बात है, हरियाणा में ग्रुप-III और ग्रुप-IV में भी 3 प्रतिशत खिलाड़ी कोटा कांग्रेस की पूर्ववर्ती सरकार ने किया था। उस खेल कोटे को भी समाप्त करने का काम मौजूदा सरकार ने हरियाणा के अन्दर किया है।

जो खिलाड़ी डीएसपी बनाए गए थे, उन डीएसपी खिलाड़ियों को इन दस वर्षों में प्रमोशन तक नहीं दी गई है। अत: आज वे खिलाड़ी धरने देने पर मजबूर हो रहे हैं।

इसके साथ-साथ जो कैश अवॉर्ड मिलता था, आज हमारे खिलाड़ी उस कैश अवॉर्ड से भी महरूम हो गए हैं, जैसे सरकार उनसे किसी बात का बदला ले रही हो कि वे मैडल लेकर आए हैं। यहां तक कि वर्ष 2021 के बाद से अभी तक, आज ही दैनिक भास्कर में खबर आई है, मानो दैनिक भास्कर को पता हो कि यह सरकार नियम 193 का डिस्कशन लेकर आएगी। ?खेलों के पदक विजेता कैश अवॉर्ड से वंचित?। वर्ष 2021 के बाद से कैश अवॉर्ड दिए ही नहीं गए।

दूसरी ओर, नैशनल और इंटरनैशनल वालों को तो आप अभी कह रहे हैं कि वंचित रखा है, मगर देंगे। वे वर्ष 2021 से वंचित हैं, लेकिन बाकियों को तो आपने कैश अवॉर्ड देना बंद कर दिया? हमारी कांग्रेस की सरकार के समय जूनियर, सब-जूनियर और यूथ-गेम्स में भी जो खिलाड़ी मैडल लेकर आते थे, उनको भी कैश आवॉर्ड दिया जाता था।

सर, एक और पहलू है। हमारी सरकार के समय जो नीति बनी थी, क्योंकि नीचे से प्रतिभा को खोजने की बात थी, तो एक पॉलिसी बनी थी ? ?SPAT?, जिस वजह से हरियाणा के खिलाड़ी आज इतने आगे आए हैं। ? Sports and Physical Aptitude Test?, पहली क्लास से स्पोर्ट्स और फिज़िकल एप्टिट्यूड टेस्ट किया जाता था। जो दस प्रतिशत बच्चे भागने, दौड़ने और फिज़िकल एप्टिट्यूड में अग्रणी आते थे, उनको मासिक पहली प्रोत्साहन राशि दी जाती थी। इसकी शुरूआत हरियाणा में हुई थी। इस सिस्टम से बहुत खिलाड़ी आगे आ रहे थे।

जब भाजपा की सरकार हरियाणा में आई, तो ?SPAT? का नाम ?SPEED? में बदल दिया और फिर ? SPEED? पर भी स्पीड-ब्रेकर लगाकर उसको समाप्त कर दिया। ? (व्यवधान) इसके तो कई ऐसे पहलू हैं, जिनका मैं उदाहरण देता हूं। अगर एससी समाज से आने वाली हमारी कोई खिलाड़ी बेटी अगर डिस्ट्रिक्ट या स्टेट लेवल पर पहुंचती थी, तो चालीस हजार रुपए प्रतिवर्ष की उसको प्रोत्साहन राशि मिलती थी, ताकि एससी समाज से आने वाली बेटियों की खेलों में ज्यादा से ज्यादा भागीदारी बने। सरकार ने आते ही, वर्ष 2016 में भाजपा सरकार ने एससी समाज की बेटियों को मिलने वाली इस प्रोत्साहन राशि को समाप्त करने का काम किया। ? (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष **:** हुड्डा जी, आप फिर मुझे कहेंगे कि मैं टोक रहा हूं, वीडियो चलाओगे।

? (व्यवधान)

श्री दीपेन्द्र सिंह हुड्डा **:** सर, अगर हमारा अधिकार ?बोलना? है, तो आपका अधिकार ?टोकना? है।? (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष **:** यह हरियाणा की विधान सभा नहीं है, यह संसद है।

? (व्यवधान)

श्री दीपेन्द्र सिंह हुड्डा **:** सर, हरियाणा का स्पोर्ट्स सिस्टम कैसे आगे जाए? जब देश में आधे मैडल्स हरियाणा के स्पोर्ट्स सिस्टम से आ रहे हैं, तो उस पर भी चर्चा हो। इसके साथ-साथ मैं इन्फ्रास्ट्रक्चर पर भी कहना चाहूंगा। हमारे समय में हरियाणा में 232 राजीव गांधी स्पोर्ट्स स्टेडियम्स बने थे और छ: अंतर्राष्ट्रीय कॉम्प्लेक्स बने थे। इन स्टेडियम्स में नर्सरीज और कोचेज थे, ताकि हर ग्रामीण स्पोर्ट्स स्टेडियम के अंदर किसी न किसी एक खेल की नर्सरी बने और उस पर हम ध्यान केंद्रित कर पाएं।

सर, मौजूदा सरकार ने इन नर्सरीज को बिलकुल ही नजरंदाज किया और पिछले दस वर्षों में एक भी कोच की भर्ती हरियाणा के अंदर नहीं हुई। स्टेडियम्स की दुर्दशा भी हुई है। रोहतक और अंबाला के स्टेडियम्स की दुर्दशा हुई है। अंबाला कैंट में तो एक ऐसा स्टेडियम है, जिसमें पिछले सात वर्षों से कंस्ट्रक्शन चल रही है। आज तक उसमें कंस्ट्रक्शन ही पूरी नहीं हुई। ऐसी व्यवस्था आप हरियाणा के अंदर देख पा रहे हैं।

सर, मैं यह भी कहना चाहूंगा कि खिलाड़ी का भविष्य सुरक्षित किया जाए, इन्फ्रास्ट्रक्चर क्रिएट किया जाए, प्रतिभाओं को आगे निकाला जाए। इसके साथ-साथ एक बहुत बड़ी बात होती है ? सम्मान। खिलाड़ी को सम्मान मिले। अगर आज हमारे खिलाड़ी दुनिया में जाकर अपने देश का झंडा उठाने के लिए दूसरे देशों के खिलाड़ियों से लड़ेंगे, तो उन्हें अपने सिस्टम से लड़ना न पड़े, उनको अपनी सरकार से लड़ना न पड़े। ? (व्यवधान) आप विनेश फोगाट को क्या कहेंगे, जब हमारी बहन ओलंपिक में जाएगी? कितने महीनों तक इन बेटियों को अपनी सरकार और सिस्टम से लड़ना पड़ा? सुप्रीम कोर्ट ने कहा, उसके बाद एफआईआर हुई, नहीं तो सरकार ने एफआईआर भी नहीं की थी। वह बेटियों से छेड़छाड़ का मामले में क्या कारण था, हमें नहीं पता, क्योंकि एफआईआर नहीं की गई? क्या वे स्पोर्ट्स फेड्रेशन के अध्यक्ष थे या वे भाजपा के, सत्तारूढ़ दल के सांसद थे। ? (व्यवधान) जो भी कारण रहा, इस तरह की बात नहीं होनी चाहिए।

सर, खिलाड़ियों को सम्मान मिलना चाहिए। जब खिलाड़ी मैडल्स लेकर आते हैं, उन खिलाड़ियों के साथ फोटो खिंचवाने के लिए सरकार के मंत्री एयरपोर्ट पर पहुंच जाते हैं, लेकिन उन बेटियों के साथ अगर कुछ गलत हो गया और एक नहीं, बल्कि छ: - छ: ओलंपिक विजेता बेटियां धरने पर बैठी हैं। जब वे मेडल जीतकर आई थीं, तो जो उनके साथ फोटो खिंचवा रहे थे, वहां जाकर किसी ने उनकी बात तक नहीं सुनी।

16.00 hrs

? (व्यवधान) महोदय, मैं सवाल पूछना चाहता हूँ।? (व्यवधान) मैं सरकार से यह सवाल पूछना चाहता हूँ।? (व्यवधान) गंगा में मेडल बहाने की बात कही।? (व्यवधान) आप ओलम्पिक मेडल्स की बात कर रहे हैं।? (व्यवधान) आप ओलम्पिक खेलों में अपनी तैयारी की बात कर रहे हैं।? (व्यवधान) मगर जब खिलाड़ियों ने यह कहा कि हमारे साथ इस देश में अन्याय हो रहा है।? (व्यवधान) जब खिलाड़ी बेटियों ने कहा कि हमारे साथ इस

देश में अन्याय हो रहा है और हम इन मेडल्स को गंगा में बहा देंगे तो कम से कम खेल मंत्री जी का बयान आना चाहिए था कि नहीं, ये देश के लिए मेडल्स लाए हैं, ये मेडल्स देश के लिए आए हैं, इनको गंगा में नहीं बहाना है और आपको न्याय मिलेगा।? (व्यवधान) न्याय मिलेगा का बयान भी नहीं आया।? (व्यवधान) न्याय मिलेगा का बयान भी आ जाता तो हम संतुष्ट हो जाते।? (व्यवधान)

महोदय, यह देश महाभारत का देश है। मैं स्वयं ऐसे प्रदेश से आया हूँ, जहाँ कुरुक्षेत्र में महाभारत का युद्ध लड़ा गया था। हमारी बहन, बेटी के मान-सम्मान पर बात आयी तो देश में कुरुक्षेत्र में महाभारत का रण हुआ। मैं सरकार से यह पूछना चाहता हूँ।? (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष **:** माननीय मंत्री जी, आप क्या कह रहे हैं?

श्रम और रोजगार मंत्री**;** तथा युवक कार्यक्रम और खेल मंत्री **(**डॉ**.** मनसुख मांडविया**) :** कुरुक्षेत्र में? (व्यवधान)

श्री दीपेन्द्र सिंह हुड्डा **:** महोदय, मैं यह भी कहना चाहता हूँ और मैं उस समय सरकार की तरफ से दिए गए बयान पढ़ रहा हूँ। सत्तारूढ़ दल के आरोपी एक सांसद का बयान आया कि ये मेडल तो आप इतने रुपये में बेच सकते हैं। आप ओलम्पिक मेडल्स की बात कर रहे हैं। आप ओलम्पिक मेडल की बात कर रहे हैं और आप इस देश में उनकी कीमत लगा रहे हैं आप ऐसे स्पोर्ट्स फेडरेशन चला रहे हैं। इस पर प्रश्न उठेंगे। हरियाणा के खेल मंत्री, जो स्वयं पहले हॉकी के खिलाड़ी थे, हम उनका मान-सम्मान करते हैं। वे खिलाड़ी हैं, वे हरियाणा की भाजपा सरकार में खेल मंत्री थे।? (व्यवधान) उनके ही महकमे की एक जूनियर कोच ने, एक हमारी अंतर्राष्ट्रीय खिलाड़ी ने उन पर आरोप लगाया कि खेल मंत्री ने उनके साथ दुर्व्यवहार किया है।? (व्यवधान)

डॉ**.** निशिकान्त दुबे **(**गोड्डा**) :** महोदय, ये वहाँ की बात यहाँ नहीं कर सकते हैं।? (व्यवधान)

श्री दीपेन्द्र सिंह हुड्डा **:** उसके बाद भाजपा की तरफ से यह आया, जब हमने माँग की कि इन खेल मंत्री को हटाया जाए, इनको बर्खास्त किया जाए, तो यह कहा गया कि ये खेल मंत्री रहेंगे, उनको मंत्री बनाए रखा और जिस बेटी ने, मैं हरियाणा के खेल मंत्री की बात बता रहा हूँ।? (व्यवधान) जिस बेटी ने उन खेल मंत्री पर आरोप लगाया था, उनकी एक भी बात नहीं सुनी गई।? (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष **:** एक मिनट रूकिए।

माननीय सदस्य, इस सदन के अंदर यह परम्परा रही है कि हम यहाँ किसी राज्य की विधान सभा की चर्चा न करें और अन्य सदन की चर्चा न करें। आप वरिष्ठ सदस्य हैं।

श्री दीपेन्द्र सिंह हुड्डा **:** सर, मैं खेल मंत्रालय, भारत सरकार और ओलम्पिक्स के मेडलिस्ट्स की बात कर रहा हूँ। खैर आपने जो बात कही है, मैं उस बात पर आगे बढ़ते हुए कहना चाहता हूँ कि मेरा संदर्भ यह है कि खिलाड़ियों को मान-सम्मान, उचित प्रोत्साहन, प्रतिभा की खोज के साथ-साथ उनके भविष्य की सुरक्षा संबंधी नीति बनने की जब तक बात नहीं होगी, क्यूँ हरियाणा आज देश के आधे से ज्यादा मेडल्स लेकर आ रहा है? हर खेलों में, पिछले 10 वर्ष से नहीं, वर्ष 2008 के बाद से, जो मैंने आपको बताया है। यह तो रिकॉर्ड की बात है, आप झुठला नहीं सकते हैं कि वर्ष 2008 के ओलम्पिक में कितने मेडल्स आए, वर्ष 2012 के ओलम्पिक्स में कितने मेडल्स आए, तो हरियाणा के खिलाड़ी क्यों मेडल्स ला रहे हैं, तो कुछ न कुछ उस नीति में अच्छी बात होगी। आप उसे समझें, उसे अपनाएं, हमें खुशी होगी। आपने कुछ अच्छा कार्य किया, हम भी उसकी सराहना करेंगे, क्योंकि खेल और खिलाड़ी हर तरह की राजनीति से ऊपर होने चाहिए। आज दु:ख होता है, जिस हरियाणा में नारा था, जय जवान,

जय किसान, जय पहलवान, जय नौजवान, जय संविधान का नारा हम देते थे, उस हरियाणा के नौजवान सैनिक बनकर भारतवर्ष का झंडा सीमा पर ऊँचा करने की बात करते थे, वहाँ पर आग्निवीर योजना ले आए और खिलाड़ी बनकर दुनिया के पोडियम पर जाकर राष्ट्र गान बजवाकर झंडा ऊँचा करने की बात करते थे, आज वह हरियाणा, जो खेलों में नंबर एक था, आज वह नशे में नंबर एक बन गया है। हमें इस बात की बहुत ही पीड़ा है।? (व्यवधान) आज हरियाणा में हम निराशा के साथ इस सरकार का खेलों के प्रति रवैया देख रहे हैं।? (व्यवधान) ओलम्पिक खेलों की तैयारी पर जो यह चर्चा की गई है, अच्छा होता कि यह चर्चा एक साल पहले आती।? (व्यवधान) सर, इनको क्या तकलीफ है?? (व्यवधान) मैंने ऐसा क्या गलत कहा है?? (व्यवधान) सर, मैंने ऐसा क्या गलत कहा है?? (व्यवधान) हमने ऐसा कुछ गलत नहीं कहा है, जिससे किसी को तकलीफ हो।? (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष **:** इन्होंने केवल इतना ही कहा है कि इनको ऐसा लगता है।

? (व्यवधान)

श्री दीपेन्द्र सिंह हुड्डा **:** सर, हमें ऐसा लगता है।? (व्यवधान) सर, यही बात है।? (व्यवधान) अध्यक्ष जी, हमें ऐसा लगता है कि अगर कोई आरोपी भाजपा का सांसद या भाजपा का केबिनेट मंत्री हो, तो भाजपा को उसके पक्ष में नहीं आना चाहिए। पूरी पार्टी उसके पक्ष में आकर खड़ी हो जाए, इस बात से हमें तकलीफ है। सत्तारूढ़ दल को उसके पक्ष में नहीं आना चाहिए। पूरी पार्टी को उनके पक्ष में नहीं आना चाहिए। हमारा यह संदर्भ है कि किसी ने यदि खिलाड़ियों का शोषण किया है, तो वह अपराध है। उस अपराधी को कानून का सामना करना चाहिए। आप खिलाड़ियों का मान सम्मान कीजिए। एक कहावत थी ?पढ़ोगे लिखोगे तो बनोगे नवाब, खेलोगे कूदोगे तो होगे खराब।? हरियाणा की पूर्ववर्ती हुड्डा सरकार ने उस कहावत को बदल कर दिखा दिया ?पढ़ोगे लिखोगे तो बनोगे नवाब, मगर खेलोगे कूदोगे तो भी बनोगे लाजवाब।? आपने उस कहावत का दूसरा अर्थ कर दिया ?खेलोगे कूदोगे तो बीजेपी की सरकार हो जाएगी नाराज।? दोबारा से ?खेलोगे कूदोगे तो होगे लाजवाब? इस कहावत की तरफ कदम बढ़ाएं। हम एक-एक कदम पर आपका साथ देंगे।

माननीय अध्यक्ष **:** संसदीय कार्य मंत्री जी।

संसदीय कार्य मंत्री**;** तथा अल्पसंख्यक कार्य मंत्री **(**श्री किरेन रिजिजू**) :** अध्यक्ष जी, दीपेन्द्र हुड्डा जी ने बहुत जोशीला भाषण दिया है, मुझे अच्छा लगा। खेल मंत्री जी इसका जवाब देंगे लेकिन मैं यह कहना चाहता हूं कि जिन माननीय सदस्यों ने चर्चा में हिस्सा लिया है, वे सदन में जरूर बैठे रहें क्योंकि पिछले दस सालों मे स्पोर्ट्स के क्षेत्र में जो काम हुए हैं, उनके बारे में आप जान पाएंगे। मेरा एक्सपीरिएंस रहा है कि माननीय सदस्य एलिगेशन लगाकर सदन से चले जाते हैं। मोदी सरकार ने खेलों के संबंध में कितना ज्यादा काम किया है, उसके बारे में आप जरूर सुनें। खिलाड़ियों के लिए और खेलों के लिए मोदी जी ने कितना किया है, वह खिलाड़ियों से सुनना चाहिए। आप फेडरेशन की लड़ाई के बारे में सदन में चर्चा मत कीजिए। आप सदन में ओलम्पिक खेलों की तैयारियों के बारे में बात कीजिए। खेल संघ में पालिटिक्स होनी ही है, क्योंकि चुनाव करके ही आप उसमें प्रेजिडेंट या सैक्रेटरी बन सकते हैं। जब किसी भी फेडरेशन में चुनाव के माध्यम से प्रजिडेंट और सैक्रेटरी बनते हैं तो वहां दो भाग होते ही हैं। आप वहां की पॉलिटिक्स को यहां लेकर मत आइए। आपने फेडरेशन पॉलिटिक्स को यहां मिक्स किया है जबकि यहां ओलम्पिक्स की तैयारी पर चर्चा हो रही है। खेल और खिलाड़ियों के लिए नरेन्द्र मोदी जी ने जो किया है, वह 75 साल में किसी सरकार ने नहीं किया है। आप यहां राजनीतिक भाषण मत दीजिए।? (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष **:** दादा आप क्या बोल रहे हैं?

प्रो**.** सौगत राय **(**दम दम**) :** अध्यक्ष जी, अनुराग ठाकुर जी ने अच्छा काम किया। फिर उन्हें भी ड्रॉप किया गया। सरकार स्पोर्ट्स के बारे में क्या कर रही है? अनुराग जी को मिनिस्टर रखना चाहिए था।? (व्यवधान)

माननीय अध्यक्ष **:** श्री नीरज मौर्य।

श्री नीरज मौर्य **(**आंवला**) :** अध्यक्ष जी, ओलम्पिक खेलों की तैयारी की चर्चा में आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, इसके लिए मैं आपका आभारी हूं।

16.08 hrs (Shri P.C. Mohan *in the chair*)

सभापति जी, हमारे देश के जो खिलाड़ी ओलम्पिक्स में शामिल होने जा रहे हैं, मैं सबसे पहले उन्हें अपनी ओर से तथा अपने क्षेत्र की तरफ से शुभकामनाएं देता हूं। इस बार भारत पहले के सारे रिकार्ड तोड़कर मैडल्स लाए, ऐसी हमारी शुभकामना और इच्छा है। ओलम्पिक खेलों की तैयारी पर आज जो चर्चा सदन में हो रही है, चूंकि 2024 का ओलम्पिक्स जुलाई और अगस्त में होने जा रहा है। आज खेलों की, खिलाड़ियों की जो हालत है, उसके बारे में जरूर आज यहां सदन में चर्चा हो रही है। मैं अपनी कुछ बातें इस संबंध में रखूंगा।

सभापति जी, हमारे देश में जहां 140 करोड़ लोग रहते हैं, इस ओलम्पिक्स में मात्र 117 खिलाड़ी जा रहे हैं। वर्ष 2020 के जापान के ओलम्पिक्स में हमारे 120 खिलाड़ी गए थे। इसमें जरूर चिंतन होना चाहिए कि यह संख्या क्यों घटी है। वर्ष 1900 में पहली बार भारत ने इन खेलों में भाग लिया और आज तक मात्र 35 मेडल्स भारत को आए हैं। हम लोग ग्रामीण परिवेश से आते हैं और अगर ओलम्पिक्स की तैयारी को लेकर देखा जाए तो गांवों में सरकार के द्वारा कोई ऐसा अवेयरनेंस का कार्यक्रम नहीं चलाया जाता, जिससे गांवों के नौजवान भाग ले सकें।

जहां ग्रामीण अंचलों में कहीं थोड़े-बहुत स्टेडियम भी बनाए गए हैं तो उन स्टेडियमों में ऐसी कोई सुविधा नहीं है, जहां पर हमारे बच्चे खेलों की तैयारी कर सकें, ओलंपिक्स में जाने की तैयारी कर सकें।

आज यहां पर बात आई कि बजट बढ़ाया गया है। माननीय संजय जी कह रहे थे कि जब खिलाड़ी मेडल जीत कर वापस देश आते हैं, तब प्रधान मंत्री जी उनसे चर्चा करते हैं। मैं कहना चाहता हूँ कि जब खिलाड़ी संकट में थे, जब खिलाड़ियों पर संकट था, मुझे लगता है कि तब भी उनको बुला कर चर्चा करनी चाहिए थी, लेकिन तब उनसे चर्चा नहीं की गई।

माननीय अधिष्ठाता महोदय, हम उत्तर प्रदेश से आए हैं। उत्तर प्रदेश में आज भी 80% लोग गांवों में रहते हैं। हम प्राइमरी स्कूल से पढ़े हुए हैं। पहले प्राइमरी स्कूलों में पीटी होती थी, दौड़ लगाई जाती थी, खेल होते थे। वहीं, आज बहुत ही खराब स्थिति है। सरकार को इस ओर ज़रूर चिंता करनी चाहिए। क्योंकि जब तक बच्चे खेल-कूद कर खेलों में आगे नहीं आएंगे, तब तक देश आगे नहीं बढ़ सकता है। अगर प्राइमरी स्कूलों से ही यह तैयारी शुरू करवाई जाए, तो मैं समझता हूँ कि भारत हर ओलंपिक में पहले नंबर पर आएगा, जबकि पिछली बार हम मात्र 48 वें नंबर पर थे।

माननीय अधिष्ठाता महोदय, वर्ष 2024 का यह जो ओलंपिक्स होने जा रहा है, इसको ले कर तैयारी के बारे में उधर से जो बातें बताई गई हैं या बताई जा रही हैं, हम लोग उनको सुन ही सकते हैं। अगर इस विषय पर सदन में चर्चा होनी थी तो हम लोगों को पहले अवसर दिया जाता, ताकि हम लोग और तैयारी कर के आते और जो हमारे खिलाड़ी भी यहां की बात को सुन रहे होंगे, उन तक पूरे सदन का सुझाव पहुंचता और वे और ज्यादा मेहनत करते। इसलिए मैं आपके माध्यम से सरकार से यही आग्रह करूंगा कि 140 करोड़ की जनसंख्या वाले देश में और खिलाड़ी कैसे निकलें, इस पर सरकार कार्य करे। साथ ही, खेलों में जो राजनीति घुस रही है, उसको भी खेलों से दूर किया जाए। अगर खेलों से राजनीति को दूर नहीं किया जाएगा तो जो जंतर-मंतर पर हुआ है, मुझे लगता है कि यही होता रहेगा। इस पर सरकार को गंभीरता से विचार करना चाहिए कि खेलों में राजनीति किसी भी सूरत में बर्दाश्त न की जाए। आज बहुत सारे ऐसे लोग, जो खेल के बारे में नहीं जानते हैं, लेकिन उन खेलों के फेडरेशन में बैठे हुए हैं, उन खेलों के अध्यक्ष बने हुए हैं। अगर अध्यक्षता भी किसी को देनी है, किसी को इसमें लाना है, तो उस क्षेत्र के लोगों को ही वहां मौका दिया जाएगा। मैं समझता हूँ कि इससे हमारे देश के खेलों में सुधार हो सकता है।

माननीय सभापति महोदय, हम इस बार ओलंपिक खेलों में 117 खिलाड़ी भेज रहे हैं। इस बारे में भी कोई योजना होनी चाहिए कि हम और प्रतिभाओं को कैसे आगे लाएं। हमारे यहां प्रतिभाओं की कमी नहीं है, लेकिन मैं देखता हूँ कि लोगों को अवसर नहीं मिलता। अवसर इसलिए नहीं मिलता, क्योंकि हर जगह पर राजनीति घुसी हुई है। जब राजनीति घुसी होगी तो लोगों के पास इतनी सिफारिश नहीं है, जो लोग गांवों में रहते हैं, भोले-भाले लोग हैं, उनके पास इतनी क्षमता नहीं है कि वे कैसे वहां तक पहुंचे। इसलिए इस पर बल देते हुए कि आने वाले समय में सरकार खेलों में, चाहे कोई फेडरेशन हो, चाहे कोई अन्य संस्थान हो, वहां पर अगर उसी क्षेत्र के लोगों को बिठाया जाए, तो मैं समझता हूँ कि भारत हर ओलंपिक खेलों में नंबर एक आएगा और जो भी अंतर्राष्ट्रीय खेल होंगे, उनमें भारत आगे निकलेगा, ऐसा मेरा मानना है।

माननीय सभापति जी, मैं खिलाड़ियों को शुभकामनाएं देते हुए सरकार से यह उम्मीद करता हूँ, अपेक्षा करता हूँ कि हमारे जो खिलाड़ी वहां पर जा रहे हैं, उनको हर तरह की सुविधा दी जाए, उनका हर तरह से ध्यान रखा जाए। उनका मनोबल यह सदन भी बढ़ाए कि इस बार सात मेडलों का रिकॉर्ड तोड़ कर हमको 70 मेडल्स लाने हैं। हमको यह काम करने की आवश्यता है, क्योंकि चार दिनों में इससे ज्यादा कुछ हो नहीं सकता है।

मुझे जानकारी मिली है कि इस ओलंपिक में लगभग 329 मेडल्स हैं। इन 329 मेडल्स में से अगर 70 मेडल्स भी भारत लाएगा तो हम सब लोग बहुत गौरवान्वित महसूस करेंगे। इन्हीं शुभकामनाओं के साथ, इन्हीं उम्मीदों के साथ मैं पुन: भारत के खिलाड़ियों को शुभकामना देता हूं। मैं उनको अग्रिम बधाई देता हूं कि वे हमारे देश का नाम रोशन करेंगे।

महोदय, मैं आपका आभार प्रकट करता हूं कि आपने मुझे ओलंपिक्स जैसे महत्वपूर्ण विषय पर बोलने का अवसर दिया। आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री कीर्ति आज़ाद (बर्धमान-दुर्गापुर) : धन्यवाद सभापति जी। खेल और खिलाड़ी की कोई जाति नहीं होती, न उसका कोई मजहब होता है। राजनीतिक पार्टियाँ खेल को शायद उतना महत्व नहीं देती, जितना देना चाहिए, लेकिन मैं पश्चिम बंगाल के अपने मुख्यमंत्री का सहृदय धन्यवाद करना चाहूंगा। कला, खेल, संगीत सहित सब

क्षेत्रों से आपको इस संसद के अंदर व्यक्ति मिलेंगे, जो अपने क्षेत्र की आवाज को उठा सकते हैं। मैं अपनी ओर से अपनी मुख्यमंत्री ममता बंदोपाध्याय जी का बहुत धन्यवाद करता हूं कि उन्होंने सभी क्षेत्रों से लोगों को पार्लियामेंट में बुलाकर उनकी आवाज उठाने का अवसर दिया।

सभापति जी, चूंकि खेल और खिलाड़ी की कोई जाति और मजहब नहीं होती है, इसलिए राजनीतिक लोग भी इसको ज्यादा गंभीरता से नहीं लेते हैं। संजय जयसवाल जी अभी हैं या चले गए?? (व्यवधान) वह चले गए। वह बोल रहे थे कि जब हम तैयारी की बात करेंगे तो विपक्ष को दर्द होगा। मुझे मालूम नहीं कि उनको या उनकी पार्टी को तब दर्द हुआ था, जब हमारी महिला कुश्ती की बेटियों और बहनों के साथ अत्याचार हुआ था और वे त्राहिमाम-त्राहिमाम कर रही थीं। तब किसी की आवाज नहीं उठी थी।

मुझे याद है, जब मैं छोटा था। मैं भी भारत के लिए क्रिकेट खेला हूं। हमने वर्ष 1983 में विश्व कप जीता। हमारे साथ युसुफ पठान बैठे हुए है, जो वर्ष 2012 में विश्व कप भारत के लिए जीते। फुटबॉल के हमारे कप्तान प्रसून्न बनर्जी सर बैठे है। इनको पदमश्री भी मिला हुआ है। मुझे भी याद है, जब मैं छोटा था और उस समय क्रिकेट में पैसा नहीं था। हम लोग ट्रेन के थर्ड क्लास बोगी में जाया करते थे। सामान टॉयलेट में पड़ा हुआ होता था। इसी तरह से हम लोग बैठे रहते थे और खेलने के लिए जाते थे। स्कूल गेम फेडरेशन ऑफ इंडिया तो शायद अपना ही है, किरेन रिजिजू जी मंत्री रहे हुए हैं। वही एसजीएफआई हमें ले जाया करती थी।

सभापति महोदय, आज भी वही परिस्थिति हमारे एथलीट्स की है, क्रिकेट की तो नहीं, लेकिन हमारे एथलीट्स की है। आज भी हमारे जो खिलाड़ी हैं, उनकी यही हालत है। वे जनरल बोगी में जाते हैं, टॉयलेट के सामने बैठते हैं और टॉयलेट में उनका सामान होता है। जब वे खेलने के जाते हैं तो उबड़-खाबड़ मैदानों पर खेलते हैं। उनको खाने के लिए ढंग से कुछ भी नहीं मिलता है। वे डॉरमेट्री में रहते हैं और टॉयलेट के सामने उनका खाना बनता है। यह मैं नहीं कहता हूं, बल्कि यह टेलीविजन पर एक बार नहीं, अनेकों बार देखा गया है। हम बात करते हैं कि हमारी प्रिपेयर्डनेस क्या है! अगर आपको ओलंपिक्स की तैयारी की बात करनी है तो वर्ष 2028 की तैयारी अभी करनी चाहिए, न कि जब आपकी टीम चली गई हो। ओलंपिक्स की तैयारी और खेल के बारे में लोग समझते हैं कि खेल ऐसे ही है। जब से टेलीविजन पर यह खेल आना शुरू हुआ है और 30 कैमरों से क्रिकेट को अलग-अलग एंगल्स से दिखाया जाता है, लोग मुझे सिखाने लगे हैं कि क्रिकेट कैसे खेला जाता है। उनको मालूम नहीं कि जब थॉमसन 100 की स्पीड पर गेंद करता था, सुनील गवास्कर सामने होता था, जब सचिन तेंदुलकर एक तरफ हो और ब्रेट्ली दूसरी तरफ हो तो प्वाइंट 42 सेकेंड्स गेंद को निकलने में, बल्लेबाज तक पहुंचने में और प्वाइंट 38 सेकेंड्स बल्लेबाज को तय करने में कि मैं फ्रंट फूट पर जाऊं, बैक फूट पर जाऊं, हुक करूं, कट करूं, पुल करूं, क्या करूं, लेकिन लोग हमको सिखाते हैं। यानी यह बॉल छुट्टी और यह बैटसमैन के पास आई, बस यही समय है। इन दो चुटकियों के बीच का खेल है। उसको संभवत: लोग समझेंगे नहीं, बहुत आसानी से लेते हैं कि यह हमारे प्रधानमंत्री जी ने किया। मुझे बड़ी खुशी है कि जब कुश्ती की हमारी महिला खिलाड़ी आई थी तो प्रधानमंत्री जी ने उनका स्वागत किया था, सम्मान किया था। बहुत प्रसन्नता हुई थी, जब वह उनके साथ खा रहे थे। लेकिन, तब दुख हुआ था, जब उन महिला खिलाड़ियों के साथ अत्याचार हुआ था, तब उन्होंने मौन व्रत धारण करके रखा था। हम अपनी महिलाओं के लिए बोलते हैं कि बेटी बचाओ ? बेटी पढ़ाओ। हमारी बेटियाँ जो बाहर से स्वर्ण और दूसरे पदक लेकर आती हैं, यह सदन के लिए शर्म की बात है कि यदि हम उनको अपनी तरफ से संरक्षण नहीं दे सकते हैं तो यह बड़े खेद की बात है। आज बात करते हैं कि हमने नीरज चोपड़ा को भेजा। मैं यह जानना चाहता हूं कि जब तक नीरज चोपड़ा ने भल्ला फेंकने (जैवलीन) में स्वर्ण पदक नहीं जीता था, तब तक उसके लिए सरकार ने क्या किया था। अभिनव बिंद्रा, जिन्होंने पहला स्वर्ण पदक शूटिंग के अंदर जीता, उसके पहले सरकार ने उनके लिए क्या किया था या एसोसिएशन फेडरेशन ने उनके लिए क्या किया था? कर्णम

मल्लेश्वरी, जिनका नाम टीम से हटा दिया गया था, मैं उस समय पहली बार सांसद बनकर वर्ष 1999 में पार्लियामेंट में आया था, यह वर्ष 2002 की बात है, तब उनको निकाल दिया गया था। जब वे वापस आईं, तो उन्होंने उस समय कांस्य पदक जीता। सभी को बड़ी प्रसन्नता हुई। किसी ने उनका नाम नहीं सुना था, तब उनको खूब अलग-अलग उपहार मिले थे।

मैं सरकार से यह जानना चाहता हूं कि ओलम्पिक्स में, एशियन गेम्स में, वर्ल्ड चैम्पियनशिप में भेजने से पहले आप उनके लिए क्या करते हैं? जीत के आने के बाद तो आप न जाने क्या-क्या चीजें उनको देते हैं, जो उन्हें मिलनी भी चाहिए। मैं यह जानना चाहता हूं कि एक अच्छा खिलाड़ी, जैसे अभिनव बिंद्रा बनाने के लिए, नीरज चोपड़ा बनाने के लिए, पी.वी.सिंधु बनाने के लिए, साइना नेहवाल बनाने के लिए, सानिया मिर्जा बनाने के लिए सरकार ने क्या-क्या किया? सरकार को यह जवाब देना चाहिए कि कौन सी प्रिपेयर्डनेस है? आज एक बार कोई व्यक्ति, कोई लड़का या लड़की, हमारे देश की बेटी या बेटा अच्छा करके जब बाहर से आता है तो आप सब कुछ देने के लिए तैयार हो जाते हैं। लेकिन, कैसे वह अच्छा बनकर आगे बढ़े, इसके लिए आप क्या करते हैं? साई में, भारतीय खेल प्राधिकरण में कहां हैं कोचेज़, कहां हैं प्रशिक्षक? आपने खेलो इंडिया शुरू किया, यह बहुत प्रसन्नता की बात है। जो भी आए, वह इसमें खेल सकता है। जो भी खेलने आएंगे, उनमें एकलव्य की प्रतिभा की तलाश कौन करेगा? क्या इसके लिए कोई व्यवस्था है? इसकी व्यवस्था नहीं होती है। इसकी व्यवस्था इसलिए नहीं होती, क्योंकि वहां 70 प्रतिशत से अधिक जगह प्रशिक्षकों की खाली पड़ी हुई हैं।

मुझे याद है, मैं जब नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ स्पोर्ट्स में जाता था, एक नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ स्पोर्ट्स पटियाला था, जहां पर कोचेज़ तैयार किए जाते थे। इस नेशनल स्टेडियम के अंदर क्रिकेट, हॉकी, फुटबाल, बॉस्केटबॉल, बैडमिंडन, सभी खेल खेले जाते थे और सभी के प्रशिक्षक होते थे। हम लोगों को प्रशिक्षण मिलता था। हम लोग वहां सीखते थे और सीखने के बाद आगे खेलते थे। आज वह परिस्थिति कहां है?

मैं अधिक बातों को न कहते हुए, अपनी बात जल्दी समाप्त करुंगा। अभी रिजीजू जी ने कहा कि खेल संघ वाले हैं, वे आपस में चुनाव लड़ते हैं, तो उनकी आपस में लड़ाई तो होगी ही। आप यहां खाक मारने के लिए बैठे हैं, स्पोर्ट्स मिनिस्ट्री किसलिए बैठी हुई है? यदि आप उन लड़ाइयों को सुधार करके जो प्रतिभावान लोग हैं, उनको आप आगे नहीं भेज सकते, तो फिर आपका फायदा क्या है? ऐसी बातें कहते हुए आदमी को जरा सोच लेना चाहिए।

याद रखिए, हर एक व्यक्ति में एक खिलाड़ी रहा है। बचपन से जब बड़े हुए हैं तो हमने कोई न कोई खेल खेला है, चाहे गुल्ली-डंडा खेला है, चाहे खो-खो खेला है, चाहे हॉकी खेला है, हमने कोई न कोई खेल खेला है। ? (व्यवधान) हम सभी के अंदर एक खिलाड़ी का दिल होता है। एक खिलाड़ी के दिल में यह बात होती है कि वह खेल और खेल की भावना को साथ में रखता है। वह जाति और मजहब की बात नहीं करता है। ये लोग बेटी बचाने वाली बात करेंगे, जिन्होंने सीता मां का आज तक कोई भी सम्मान नहीं किया। जो कभी सीता-राम नहीं बोलते, वे बेटी का सम्मान करेंगे। ऐसी अपेक्षा मैं इनसे नहीं रखता।

मैं आशा करता हूं कि अगले सत्र में वर्ष 2028 में ओलम्पिक्स में क्या करेंगे, उसकी तैयारी के बारे में यहां आकर बताएंगे, तब मैं समझूंगा। हालांकि ये तब तक रहेंगे या नहीं रहेंगे, इनकी हालत दुनिया जानती है। साथ में ललन जी बैठे हुए हैं, इन्होंने डिमांड कर दी है। दुकान के बाहर नाम लिखने की जो बात आ रही है, इसके लिए डिमांड चालू कर दी है कि इसे हटाओ। मैं एक बार पुन: धन्यवाद देता हूं कि आपने मुझे बोलने का अवसर दिया।

SHRI D. M. KATHIR ANAND (VELLORE): Sir, the modern Olympic Games are leading international sports events featuring summer and winter sports competitions in which thousands of athletes from around the world participate. India has the world?s largest population which is one-sixth of the global population and India is the 9th largest economy. We also have the biggest democratic existence. The question arises, despite having a population of over a billion, why India lags behind in the race of Olympic glory. Every self-respecting Indian knows that India's strike rate at the Olympics has been less than encouraging.

After a century since its first participation in Olympics, India, a nation with a population of 1.3 billion has merely 28 medals to its name. The United States of America, on the other hand, leads the medal tally with 2,522 medals. This clearly is not the case of population of a country which can be said is directly proportional to the number of medals.

India has managed to put a man in space, led many scientific discoveries, forced the world to acknowledge India's stride in the field of defence and science & technology. Indian cricket team is considered to be one of the world's best teams. Why are we not able to bring the same dedication and integrity to sports in general and the Olympic Games in particular? In fact, being the second most populous and the most democratic country in the world hinders our attempts to harvest a rich haul of medals at the Olympics.

Now let me discuss this in detail. Where does India lack in the Olympic competition? We give a lot of importance to cricket. We, as a country, are obsessed with a singular sport and that is cricket. It is only during major events like Olympics when other sports are given a part of the limelight and fan cheering. For the rest of the year, we stay ignorant of who's who of other sports. They are promoted less

and there are fewer sponsors for the other sports. There are even less fans hooting and cheering them to do better.

Sir, we do lack proper infrastructure, and sports infrastructure in particular, for training and practice sessions of athletes that could make them more competent and well equipped to deal with world class competitors. It would have been far better if our athletes could get access to better infrastructure and get to play all across the country to stay practised.

Heads of sports organizations are simply people favoured by the Ruling Party. They have no idea of the sports or their necessities and have chosen to leave the people who are serious about sports.

There is lack of encouragement. Right from the very beginning, youth in India are discouraged from pursuing a career in sports. Our parents are obsessed with the likes of medical and engineering education. And for girls, the scenario is even worse with the list of drawbacks and hindrances they have to face before they could persuade their parents to allow them to play. Most of them are forced to quit sports in order to do something that would give them better job security.

Sir, athletes do not receive proper funding to meet their needs. Sportsmen do not have constant source of income and no help is given by the Government in their early stages of training. Some researches prove that the athletes of the leading nations are genetically and physically fitter than our people. They get proper nutrition that is required for a sportsperson with all the necessary elements while our athletes rely on their own little efforts to stay strong and fit.

Sir, poor administration is also another reason. No proper governing of administrative issues is the prime concern with Indian sports. Non-involvement of ex-sportsmen in administrative staff is also a major reason why India lacks in this sector. Our economy has been prospering and allotment of funds to different fields of development has been improving with each year's budget. However, there is still relatively very less allotment of funds for sports given the sheer number of youths who are willing to take up sports seriously. We have got IITs and IIMs, but when will we get a dedicated sports university?

We, as a nation are corrupt to the core regarding sports. Corruption in sports ensures that affluent candidates score over talented candidates and that is what refuses to recognize dedicated and talented sportsmen from smaller cities.

Now, I will list out the improvements required that can be done to put our India on the top edge of the Olympic awards. Khelo India Youth Games, held annually in January or February, are the national level multidisciplinary grassroots games in India held for two categories, namely under-17 years school students and under-21 college students. Every year nearly about 1,000 kids are given scholarship from Rs. 5,00,000 to Rs. 8,00,000 which is not sufficient. India, being a developing country, cannot invest a major part of its economy in sports. India has a huge number of industrialists and businessmen who can easily take up responsibilities to encourage these talented athletes. We see a lot of marriages and public events sponsored by great business people. We have business magnates in India. But when it comes to sports, the sponsorship is lacking.

There is another big reason why our sportsmen are not achieving. It is because of criticism. There is a lot of criticism about the performance of Indian athletes over the years. This decreases their morale. The point is that if we cannot support them, let us not criticize them. You do not know their stories, their food facility, coaching, support and money. Still, they made it to the Olympics to compete with the ones who were trained, supported and recognized well by their respective country or the Government.

We might have a lot of Dhonis, but it is difficult to find more Mary Koms and Sania Nehwals owing to the gender discrimination that has paved its way into sports. Sports and women are the two opposite ends of a pole. The society does not encourage girls to be an active part of sports. Moreover, they are considered to be delicate creatures and their potential in sports is questioned. This should be stopped. There should be special policies to encourage participation of women in sports.

We are lacking in having transparency in the system. The selection process of players and Board members needs to be more transparent. The head post of sports-governing body should be given to an ex-sportsman. This will create job opportunities for sportsmen as well. Players should be only judged upon their performance and not on any other factors. More than the nation, the States have to participate a lot in development of the sports.

In Tamil Nadu, our Sports Minister Shri Udhayanidhi has been a favourite Minister among the youth in Tamil Nadu. He has been promoting all the games in Tamil Nadu. He hosted Khelo India Youth Games which brought great joy to Tamil Nadu. He hosted a number of national and international sporting events since 2021,

including the 44th Chess Olympiad, the Squash World Cup 2023 and the Chennai Open Challenger.

The Tamil Nadu Government is also planning to construct six stadiums for para-athletes, which is happening for the first time in the country. Setting up of Olympic academies in Chennai, Tiruchi, Madurai and Nilgiris, and the establishment of the Tamil Nadu Sports Science Centre at Jawaharlal Nehru Stadium in Chennai are among the effective measures being taken by the Government to improve sports in the State. Tamil Nadu?s traditional sport of Silambam has also been included and taken up by the Government, which is a welcome initiative.

Our Sports Minister Shri Udhayanidhi has also hosted the Chess Olympiad which has triggered a lot of youth and they have all started practising chess. Tomorrow, we will have a lot of chess competitors, participants to take part in international competitions. In Tamil Nadu, all our party members, including DMK, and also Members of Parliament as well as MLAs, are distributing sports kits. Our Youth Minister has instructed us to promote sports in various areas.

To conclude, I would like to appreciate this Government also because I came to know that this is the first time that the Ministry of Defence has announced that 22 male and two female athletes from the Defence sector are participating in the upcoming Olympic Games. This is a great news to us because participation of Defence sector in the Olympic Games has to be applauded.

Encouragement has to be given from the Indian Government. Olympics is not just sports. It is not only participation, but it is also an exhibition of talent. There are a number of youths in villages, in cities, in every nook and corner of India where they have to be found out and they have to be trained. I am a horse rider. I know how good an equestrian sport is. When you take up horse riding, there are two parts in it. One part is the training for the riders and another one is

the training for the horses. We have a lot of good riders but we lack in trainers for the horses. Good horses have to be procured. Where is the training academy for the equestrian sport in India?

When we talk about academies, a lot of academies have to be promoted. Who is going to sponsor for young athletes who are going for the Olympics or any other National Game? So, the Government has to find it out. We have to leave away our politics aside. When it comes to India, it has to have an international value.

Definitely, our Indian team will perform well in the upcoming Olympics, and I hope they will claim more medals in honour of India. Secondly, in the upcoming Olympics, definitely, our youth have to participate, and these youths have to be identified.

The Government has to take up the responsibility of identifying youth in each and every corner of India, and they have to be trained and they have to be put across in the Olympic competition. If it is done, they will definitely bring laurels to India.

Thank you for giving me the opportunity.

SHRI G. M. HARISH BALAYOGI (AMALAPURAM): Hon. Chairperson, Sir, today, I stand before you with immense pride and joy as we celebrate and send our heartfelt congratulations to the Indian contingent heading to the Paris Olympics 2024. Under the leadership of our hon. Prime Minister Narendra Modi ji, we have seen a remarkable transformation in Indian sports especially with regard to sports infrastructure and development.

On behalf of our Party leader Shri Nara Chandrababu Naidu ji and Telugu Desam Party, I would like to begin by congratulating all our sportspersons who are representing our nation at the Olympics to be held in Paris. I am sure that all of us here, along with the rest of our brothers and sisters in India and across the world, will cheer and support our sportspersons as they bring even more glory to our country.

Our country has a long and vibrant association with Olympics. Right from its modern-day *avatar* in 1900s when a sole sportsperson and that too a Britisher represented India to the current contingent of 117 sportspersons, our country has grown tremendously and is currently on the right track to become one of the leading nations in the Olympics. I am extremely proud of all the athletes especially those from Andhra Pradesh such as, Satwik Sairaj from Amalapuram in badminton; Dhiraj from Vijayawada in archery; and Jyotika from Tanuku and Jyothi from Visakhapatnam in athletics.

Andhra Pradesh has a proud history when it comes to Olympics with sportspersons such as Karnam Malleswari ji ? first Indian woman to win an Olympic medal, P.V. Sindhu and various others. Each and every one of them has made us extremely proud.

As the MP from Amalapuram, it fills me with immense pride to see our Satwik Sairaj representing India. Our Chief Minister Chandrababu Naidu ji has always been a staunch believer in the power of sports and a relentless enabler of athletic talent. The glory of Indian badminton is a testament to his visionary support for sports. The foundations laid and the support given to badminton during his tenure, have resulted in remarkable achievements we see today.

Hon. Chairperson, Sir, I firmly believe that to harness the true potential of our Indian sportspersons, we must continue to establish and enhance sports infrastructure across the nation. The Modi Government has made significant strides in the direction over the last decade. The ?Khelo India Initiative? which identifies and nurtures sports talent from schools is a commendable step. However, to build a long-term vision for Indian sports, we need to accelerate our efforts. For example, under the ?Khelo India Initiative?, our State was to have ten sports infrastructure projects, of which only two have been completed; four are under progress; and four are yet to start. In our people?s capital, Amravati, our Chief Minister Nara Chandrababu Naidu ji has planned an ambitious sports city. This city is envisioned to be a hub for nurturing talent and will include a world-class sports university. Our HRD Minister, Nara Lokesh Garu, has been a vocal advocate for sports education and the integration of technology into it. He believes that the future of sports infrastructure lies in combining cutting-edge technology with the state-of-the-art facilities to provide world class training for our youth.

Nara Lokesh Ji?s vision for sports education, integrated with technology, is paving the way for a brighter future for our athletes. It is crucial that our Government invests in States like Andhra Pradesh which have a clear vision for sports and are aligned with the aspirations of a new India. By doing so, we can ensure that our athletes receive the best possible support and resources to excel on the world stage.

Sir, allow me to speak about my Constituency Amalapuram. I have had the privilege of interacting with many local sports persons at the GMC Balayogi Stadium which is named after my beloved father. He always envisioned state of the art sports facilities for the rural youth to nurture the talent at the grass root level.

Sir, the passion and talent these young athletes possess are truly immense and inspiring. Being a young MP from Andhra Pradesh, I understand the importance of sports in overall development. It is vital that we create opportunities for our youth, not just for their athletic careers but for their personal growth as well.

Moreover, sports are essential for maintaining good health. In a time where sedentary lifestyles are becoming increasingly common, promoting physical activity through sports can help combat various health issues. Encouraging our youth to participate in sports from an early age instils healthy habits that can last a lifetime. I firmly believe in the importance of sports for the overall development of our youth and shall stand in support of any and all initiatives at the Central and State level for the growth of Amalapuram, Andhra Pradesh and India as a whole.

Respected Sir, I also would like to make specific requests to the State of Andhra Pradesh. We urge the Central Government to support the establishment of a Sports University in Amaravati. This university will be pivotal in providing world class training and education to our athletes, integrated with advanced technology as envisioned by HRD Minister Nara Lokesh Garu.

Andhra Pradesh has a rich history of hosting successful international events, such as the Afro-Asian Games in 2002 under the leadership of Chandrababu Naidu Ji. We request the Central Government to consider Andhra Pradesh as the host for the upcoming National Games, showcasing our State?s capabilities and commitment to sports.

Finally, I would also request that my constituency is the home to many passionate and talented athletes. To nurture this talent, we seek funds to update and build sports infrastructure in Amalapuram, particularly enhancing facilities at the GMC Balayogi Stadium.

To conclude, Sir, as we prepare for the Paris Olympics 2024, let us pledge to continue supporting our athletes, building robust sports infrastructure and fostering a culture of sportsmanship and excellence. Gold medals are not made of gold; they are made of sweat, determination, and hard to find alloy called guts. I am sure our current Olympic contingent has an abundance of this alloy and my best wishes are with them.

Thank you and Jai hind.

श्री श्रीरंग आप्पा चंदू बारणे **(**मावल**) :** माननीय सभापति महोदय, नियम 193 के तहत ?आगामी ओलंपिक खेलों के लिए भारत की व्यापक तैयारियां? नामक विषय पर चर्चा चल रही है। खेलों में जो-जो कमियां हैं, उनकी तैयारियों पर यहां निश्चित रूप से चर्चा होगी। भारत के हर एक क्षेत्र में जितने भी खिलाड़ी हैं, उन खिलाड़ियों के भविष्य के लिए निश्चित रूप से केन्द्र और राज्य सरकार निर्धारित लक्ष्य रखकर कार्रवाई करेगी। मैं ज्यादा लंबी चर्चा नहीं करूंगा। मैं यहां पर सिर्फ दो-चार सुझाव दूंगा।

माननीय खेल मंत्री मांडविया जी इस चर्चा को सुनने के लिए यहां आए हैं। जब मांडविया जी किसी मंत्रालय की जिम्मेदारी लेते हैं, तो वे पूर्ण रूप एवं अच्छी तरह से काम करते हैं। मैंने दस साल में देखा है, जिन-जिन मंत्रियों के पास खेल विभाग था, जिनमें किरेन रिजिजू जी, अनुराग ठाकुर जी और अभी मांडविया जी हैं, जिन्होंने इस विभाग को सम्भाला है, इस मंत्रालय को न्याय दिया है और मैं आगे न्याय देने की अपेक्षा करता हूं।

इस देश में ज्यादातर ओलम्पिक में जाने वाले खिलाड़ियों की संख्या बहुत सारी है, लेकिन मेडल मिलने की संख्या कम है। इस पर प्राथमिक रूप से राज्य सरकारों से मिलकर विभाग द्वारा जो-जो कमियां हैं, उनमें सुधार करने की आवश्यकता है। जो खिलाड़ी हैं, उनकी बहुत सारी अपेक्षाएं सरकार से होती हैं, चाहे वह राज्य सरकार हो या केन्द्र सरकार हो। जिस उम्र में वे खेलते हैं, तैयारी करते हैं, उनमें कई गरीब परिवार के खिलाड़ी होते हैं, उनको सुविधाओं का अभाव होता है और फाइनेंशियली अभाव रहता है। अगर इस पर सरकार ने ध्यान दिया और पूरी तरह से सपोर्ट किया तो मुझे लगता है कि 140 करोड़ के देश में, दुनिया में सबसे ज्यादा आबादी वाले देश में ज्यादा से ज्यादा स्पोर्ट्समैन तैयार हो जाएंगे।

महोदय, भारत को कुश्ती में पहला ओलंपिक कांस्य पदक खाशाबा जाधव ने दिया था। उनके परिवार और उनकी खुद की कई सारी अपेक्षाएं सरकार से थीं, लेकिन वे अपेक्षाएं ही रह गईं। मुझे लगता है कि खेलों में सभी पार्टियां, चाहे वह कोई भी पार्टी हो, उन पार्टियों को राजनीति नहीं करनी चाहिए। खेल एक खेल होता है और हर खिलाड़ी देश के लिए खेलता है, देश को सामने रखकर खेलता है तो उसमें कोई भी राजनीति न करे। ज्यादातर जो खिलाड़ी होते हैं, वे बाद में राजनीति में आते ही हैं, लेकिन मुझे लगता है कि इस देश में आगे चलकर ओलम्पिक हो या अन्य खेल हों, उनमें खिलाड़ी ज्यादा से ज्यादा सरकार से मदद की अपेक्षा रखता है।

महोदय, मैं सदन को यह भी कहना चाहता हूं कि दस सालों में मोदी जी के नेतृत्व वाली सरकार ने खेलों को बढ़ावा देने के लिए अच्छा काम किया है। प्रधान मंत्री के कार्यकाल में ओलम्पिक खेल वर्ष 2016, जिसे रियो ओलम्पिक के नाम से जाना जाता है, उसमें भारत को दो पदक मिले, जिसमें एक रजत और कांस्य पदक था। वर्ष 2020 में टोक्यो में ओलम्पिक हुए, उसमें सात पदक मिले थे, जिनमें एक स्वर्ण, दो रजत और चार कांस्य पदक थे। कॉमनवेल्थ गेम्स में भारत की अच्छी स्थिति रही है। उसमें 66 पदक मिले थे, जिसमें 26 स्वर्ण पदक थे। इस तरह से पूरे दस का कार्यकाल देखा जाए तो मोदी सरकार के कार्यकाल में ज्यादा से ज्यादा इस पर ध्यान देकर खेलों के प्रति अच्छा काम हुआ है। मैं मंत्री जी से यह कहना चाहता हूं कि राज्य सरकारों के साथ मिलकर फौरन योजना बनाने की आवश्यकता है।

महोदय, ग्रामीण इलाकों के कई खिलाड़ी होते हैं, जिनको ग्राउण्ड उपलब्ध नहीं होता है, जिनको ज्यादातर सहायता नहीं मिलती है, जिला परिषद से मिलने वाली सहायता नहीं मिलती है। मैं सरकार से स्पोर्ट्स के लिए ज्यादा से ज्यादा बजट रखने की मांग करता हूं। सब अपेक्षा रखते हैं कि ओलम्पिक या अन्य खेलों में भारत का प्रतिनिधित्व करने में ज्यादा से ज्यादा मेडल मिल जाएं।

सभी सरकारें, चाहे राज्य में किसी भी पार्टी की सरकार हो या केन्द्र में किसी भी पार्टी की सरकार हो, उनके द्वारा आगे चलकर ज्यादा से ज्यादा खेलों के प्रति प्रावधान किया जाए। जो खिलाड़ी खेलता है, उसको आश्वासन होना चाहिए और उसको सरकार से उसको अच्छा भविष्य मिलना चाहिए कि खेलों के प्रति खेलने के बाद उनके लिए नौकरी हो, अन्य साधन हों, एक अलग से कोटा रखा जाना चाहिए। हमें सरकारों के साथ मिलकर ऐसा करना चाहिए।

मुझे लगता है कि सभी खेलों में जो-जो कमियां हैं, उन पर इस चर्चा के द्वारा केवल चर्चा न करके एक अच्छा कार्यक्रम बनाकर खेलों को बढ़ावा देने की कोशिश की जाए। मैं इतना ही कहकर अपनी बात समाप्त करता हूं।

धन्यवाद।

श्री अभय कुमार सिन्हा (औरंगाबाद) : सभापति महोदय, मैं आपका आभारी हूं कि आपने मुझे ओलंपिक्स की चर्चा पर भाग लेने का अवसर प्रदान किया।

महोदय, सबसे पहले मैं पेरिस ओलम्पिक्स में भाग लेने वाले सभी खिलाड़ियों को हार्दिक बधाई देता हूं। यह देश और खिलाड़ियों के लिए महत्वपूर्ण क्षण है। हम उनका पुरजोर समर्थन करते हैं। हम आशा और उम्मीद ही नहीं अपितु पूर्ण विश्वास रखते हैं कि हमारे खिलाड़ी देश के लिए अनेक मेडल लेकर आएंगे।

महोदय, मैं एक-दो बातों का जिक्र यहां करना चाहूंगा। बहुत दुख के साथ मैं कहना चाहते हूं कि जो बच्चे-बच्चियां हमारे देश के लिए मेडल लाने का काम करती हैं, उन्हें अपने ही देश में इंसाफ पाने के लिए रोड पर बैठना पड़ता है और उन्हें ही नहीं बल्कि पूरे देश को लज्जित होना पड़ता है।

महोदय, ?खेलो इंडिया? के तहत 1047 करोड़ रुपये के बजट का प्रावधान रखा गया है। ?खेलो इंडिया? के माध्यम से हम सरकार से और माननीय मंत्री जी से कहना चाहेंगे कि जब ?खेलो इंडिया? की बात आ रही है तो खेलो इंडिया का बजट देश की सभी पंचायतों में जाना चाहिए। सभी जगह खेल के लिए केन्द्र सरकार का योगदान हो ताकि हमारे सुदूर इलाके से, हमारे गांव से, बच्चे-बच्चियां अपनी प्रतिभा को, जो गांव में दबकर रह जाती है, उसे राज्य और देश में दिखाने का अवसर प्रदान हो।

महोदय, हम एक बात और कहना चाहते हैं, जैसा कि संजय जायसवाल जी ने कहा कि ओलम्पिक गेम्स होस्ट के लिए अहमदाबाद में सर्वे करवाया जा रहा है। हमारा एक आग्रह होगा कि हम पिछड़े राज्य बिहार से आते हैं। यह इंटरनेशनल जगह है। राजगीर में स्टेडियम का भी निर्माण हो रहा है और वहीं, बगल में, बोधगया है, जहां मगध यूनिवर्सिटी भी है और बड़ा खेल का मैदान भी है। अगर उस जगह का चयन सरकार ओलम्पिक्स होस्ट करने के लिए करे तो मैं समझता हूं कि पिछड़े राज्य के लिए यह बहुत ही महत्वपूर्ण होगा।

महोदय, दूसरी बात है कि जिस राज्य से मैं आता हूं मुझे यह देखकर दुख होता है कि पेरिस ओलम्पिक्स में वहां से एक भी खिलाड़ी नहीं है। यह मेरे राज्य में खेलों की दयनीय स्थिति को दर्शाता है। कहां पर कमी है? स्टेडियम का निर्माण सभी जगह पर हो रहा है। हाल ही में बिहार के एक स्टेडियम की तस्वीर वायरल हुई, क्योंकि यह स्टेडियम बहुत ही खराब स्थिति में था। ये बातें सिर्फ बिहार की ही नहीं हैं। यह अमूमन सभी जगह है। हमें पूरे देश में खेल के मैदानों, स्टेडियमों और प्रशिक्षण सुविधाओं का निर्माण और रखरखाव करने की आवश्यकता है। हमें अनुभवी प्रशिक्षकों और कोचों की नियुक्ति करने और खिलाड़ियों को अंतरराष्ट्रीय स्तर की प्रतिस्पर्द्धा के लिए तैयार करने के लिए आधुनिक प्रशिक्षण विधियों में निवेश करने की आवश्यकता है। हमें स्कूलों और समुदायों में खेलों को बढ़ावा देने के लिए पंचायतों में खेलों को बढ़ावा देने के लिए युवाओं को खेलों में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करने की आवश्यकता है। इसलिए मेरा आग्रह है कि केन्द्र सरकार का ?खेलो इंडिया? के तहत जो बजट है, देश के सूबों की पंचायतों तक जाए। खासकर महिलाओं की इसमें अधिक भागीदारी सुनिश्चित की जाए। इन्हीं शब्दों के साथ आपने मुझे बोलने का समय दिया, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री राजीव प्रताप रूडी **(सारण) :** महोदय, यह विषय एक न्यूट्रल विषय है। इसमें राजनीति की कितनी गुंजाइश है, यह मैं नहीं जानता हूँ, लेकिन मैं इस विषय को राजनीति से बाहर रखने का प्रयास करूंगा।

सबसे पहले मैं सोच रहा था कि हम जो ओलंपिक्स कहते रहते हैं, यह शब्द आया कहां से है? इसमें भी ईश्वर की प्रेरणा है और मुझे पता चला कि ग्रीस में एक गोडेस थीं और वह क्वीन ऑफ गोडेस कहलाती थीं। उनकी स्मृति में वहां पर हर चार सालों में खेल होता था और वहीं से यह शब्द उभरकर आया। आहिस्ते-आहिस्ते इसकी परिभाषा बदलती चली गई। वह खेल प्रतिस्पर्धा के दृष्टिकोण से देखा जाने लगा। वह गुणवत्ता के नाम से देखा जाने लगा। एक तरह से सौम्यता का वातावरण पैदा करने के लिए दुनियाभर में एक मानक स्थापित हुआ। वहीं से बढ़ते-बढ़ते इसी भगवान की प्रेरणा से लगभग 776 बी.सी. में पहले ओलंपिक गेम्स का आयोजन किया गया और उसके पश्चात लगभग कई हजार वर्षों तक ओलंपिक्स नहीं हुआ। उसके पश्चात पहला ओलंपिक्स जो पूरी दूनिया में हुआ, वह 1896 में हुआ। वह सिर्फ यूरोपियन देशों के लिए था। उसके बाद उसमें अमेरिका का प्रवेश हुआ और फिर धीरे-धीरे पूरी दुनिया के लिए वह खोला गया। आज एक खास कैलेंडर पूरे भारतवर्ष के सामने भी है और पूरी दुनिया के सामने भी है। सन् 1896 में पहला ओलंपिक्स हुआ। उसके बाद दूसरा ओलंपिक्स सन् 1900 में पेरिस में हुआ। उसके पश्चात तीसरा ओलंपिक्स भी पेरिस में हुआ और अब जो हो रहा है, 124 वर्ष के बाद फिर से पेरिस में हो रहा है। आप देखिए कि कितने दशक निकल गए हैं। So many generations have passed, and the ethics of Olympics remain the same.

पूरी दुनिया में ओलंपिक्स दो या तीन बार नहीं हो पाया। एक तो फर्स्ट वर्ल्ड वॉर के समय नहीं हो पाया था और दो बार जब ओलंपिक गेम्स नहीं हुए, वह वर्ल्ड वॉर - टू का समय था। लगभग सन् 1940 और सन् 1944 में ओलंपिक गेम्स नहीं हुए। दुनिया के इतिहास में मात्र तीन बार ओलंपिक गेम्स नहीं हुए हैं। उसके बाद ओलंपिक्स की श्रृंखला में भी परिवर्तन आया। फिर ओलंपिक्स एक ही समय में दो स्थानों पर हुआ करता था। पहला, जहां पर गर्मी होती थी, उसी समय होता था। दूसरे क्षेत्र में जहां ठंड होती थी, वहां विंटर ओलंपिक्स के नाम पर एक ही समय में दो स्थानों पर होने लगा। उसके बाद सन् 1994 में यह प्रथा बदल दी गई। इस प्रथा को बदलने के बाद उसमें यह तय हुआ कि हर दो साल में ओलंपिक्स होंगे। समर ओलंपिक्स भी दो साल के अंतराल में होगा और विंटर ओलंपिक्स भी दो साल के अंतराल में होगा।

अभी हमारे मित्र लोग कह रहे थे कि हमारी तैयारी नहीं है। हो सकता है कि हमारी तैयारी न हो, लेकिन कम से कम अगली बार जो विंटर ओलंपिक्स होने वाला है, उसमें हम सब लोग मिलकर अच्छी तैयारी करवा देते हैं तो शायद आप सब भी चलेंगे। हम सब लोग सदन में बैठेंगे तो कम से कम हमारी तैयारी अच्छी हो जाएगी और हम विंटर ओलंपिक्स की तैयारी अच्छी करवा लेंगे।

भारत की भागीदारी ओलंपिक्स में कब से है? यहां पर जब अंग्रेजों का राज था तो सबसे पहले भारत की ओलंपिक्स में भागीदारी अंग्रेजों के शासन के दौरान सन् 1900 में हुई थी। यानी कि आज से लगभग 124 साल पहले हुई थी। उस समय भी एथलेटिक्स में नॉर्मन नाम का व्यक्ति था, जो भारत का प्रतिनिधित्व कर रहा था और उसे एक सिल्वर मेडल मिला था। आप सोचिए कि सन् 1900 में जब हमारा देश आजाद नहीं था और इतना ही नहीं, आजादी के पहले भारत को हॉकी में गोल्ड मेडल मिला था। आजादी के तुरंत बाद सन् 1948 में भी भारत को गोल्ड मेडल मिला था।

17.00 hrs

अब हमें वर्ष 1948-50 के बारे में सोचना होगा। अब आप कहेंगे कि राजनीति कर रहे हैं। वर्ष 1950 से लेकर वर्ष 2014 तक हॉकी में कभी गोल्ड मेडल लेकर नहीं आए। उस समय हमारा शासन नहीं था। अब आप यह कहेंगे कि उनका शासन था, इनका शासन था। मैं उसके बारे में नहीं कहना चाहते हूं। हम सवा सौ करोड़ भारतीय देश में एक स्थान पर बहुत आगे थे, लेकिन उसके बाद से हम लोग नीचे चलते आए।। हमें इतिहास में जाना पड़ेगा। हम लोग जमशेद जी टाटा के बारे में चर्चा करते हैं। हम लोग भारत में सबसे पहले उस व्यक्ति का स्मरण जरूर करें, जो टाटा परिवार का शीर्ष हुआ करते थे। वर्ष 1920 में, यह बात कहने योग्य है कि आजादी के पहले इस देश में दोराब जी टाटा, जो जमशेद जी टाटा के समृद्ध पिता थे, उन्होंने ओलंपिक्स कमेटी का गठन किया। जिमखाना क्लब पुणे में ओलंपिक्स के खिलाड़ियों का सबसे पहले ट्रायल किया गया। सबसे पहले भारत के पांच लोगों के कंटिन्जेन्ट्स इंटरनेशनल ओलंपिक्स में गए। आप उस व्यक्ति के बारे में सोचिए। कई बार मैं पॉलिटिक्स के बारे में सोचता हूं कि हम नेताओं के साथ क्या कमी है और कई बार हम कहते हैं कि प्रशासक हम पर हावी है। लेकिन एक ऐसा क्षेत्र है जहां हम पर प्रशासक हावी नहीं है। वह क्षेत्र स्पोर्ट्स का है। जितने ओलंपिक एसोसिएशंस, जितने स्पोर्ट्स एसोसिएशंस हैं, ये किसी अधिकारी के हाथ में नहीं हैं। ये सब नेताओं के हाथ में हैं, जो हमारे और आपके जैसे लोग स्पोर्ट्स एसोसिएशंस से जुड़े हुए हैं। यही कारण होता है कि कई बार हम लोग पॉलिटिक्स में पीछे छूट जाते हैं और जब हम परफॉर्म नहीं कर पाते हैं, तो हमारी डिपेंडेंसी ब्यूरोक्रेसी पर बढ़ जाती है। यही मूल कारण है कि आज जब हम स्पोर्ट्स को देखते हैं, तो एक-दूसरे पर आरोप लगाते हैं कि आपकी सरकार क्या कर रही है, उसको यह करना चाहिए। एक क्षेत्र नेताओं के हाथ में है। हम नेताओं के ऊपर स्पोर्ट्स को बढ़ावा देने की सबसे बड़ी जिम्मेवारी है। अभी हम लोग सबसे बड़ा स्पोर्ट्स, ओलंपिक्स करके आए हैं। हम चुनाव में चुन कर यहां आए हैं। यहां कोई गुजरात से है, कोई सूरत से है, कोई पुडुचेरी से है, कोई अमृतसर से है, कोई दमन-दीव से है, कोई केरल से है, कोई लक्षद्वीप से है, कोई कोल्लम से है। हम सब पूरे भारतवर्ष में ओलंपिक्स करके आए हैं। सब अपने-अपने तरीके से यहां आए हैं। न तो मैं इनकी भाषा जानता हूं, न ही मैं तेलगू, मलयालम, गुजराती और न बंगाली बोल सकता हूं और न ही आप भोजपुरी और मैथिली बोल सकते हैं। दुनिया का एक ही प्लेटफॉर्म है। सबसे बड़ा ओलंपिक्स का भारत में जो राजनीतिक प्लेटफॉर्म है, वह भारत का इंडियन पार्लियामेंट है। इस पार्लियामेंट में शायद लोग समझ न पाएं, लेकिन जिनकी भाषा अलग हो, जिनकी बोली अलग हो, जिनका रहन-सहन अलग हो, जिनका पारिवारिक परिवेश अलग हो, पूरे भारत के प्रतिनिधि यहां आकर बैठते हैं। दुनिया में ऐसा प्लेटफॉर्म कहीं नहीं होगा, जहां 125 करोड़ के प्रतिनिधि, आप कन्नड़ बोलते हैं, आप तेलगू बोलते हैं, आप गुजराती बोलते हैं, आपका खान-पान अलग है, लेकिन हम सभी एक-दूसरे की बात सुनने के लिए यहां आते हैं। अगर यह प्लेटफॉर्म हमारे बीच में से एथलिट्स नहीं तैयार करके ओलंपिक्स खेलों में पहुंचा सके, तो शायद चिंता का विषय है और उस पर सब लोगों को विचार करना चाहिए।

महोदय, मैंने पहले भी बताया है कि कई सारे ऐसे विषय हैं कि स्पोर्ट्स के मामलों में हम सब लोगों के बीच में राजनीति कुछ अधिक है। जब हमें वर्ष 1947 में आजादी मिली तो उस समय पहली बार हमारे 86 लोगों का कंटिन्जेंट गया। उसमें एथलेटिक्स, बॉक्सिंग, साइकिलिंग, हॉकी, फुटबॉल, स्वीमिंग और वाटर पोलो थे, तब इस देश में इतने सारे स्पोर्ट्स थे, लेकिन उसके बाद हम उसको गति नहीं दे पाए। इसलिए हमें थोड़ी चिंता जरूर होगी। हम सभी को कुछ आंकड़े अपने पास रखने चाहिए, क्योंकि हम सब बच्चों के बीच में बैठते हैं, स्कूल और कॉलेज में जाते हैं, तो प्रेरणा देने के लिए बातें कहनी ही पड़ेंगी। उनका उत्साह बढ़ाना ही होगा। अब आप इसको अदरवाइज नहीं लीजिएगा। हमारी सरकार लगभग 10 साल और पांच साल आगे और आगे न जाने कितने वर्ष रहेगी, हम लोगों ने आजादी के बाद से आज तक मात्र 26 मेडल्स जीते हैं। वर्ष 2014 के बाद 9 मेडल्स, मैं नहीं कहता हूं कि यह बहुत बढ़िया है, लेकिन समकक्ष रूप से हमारे देश में स्पोर्ट्स का विस्तार हो रहा है और हमारे

खिलाड़ी अच्छा भी कर रहे हैं। हम सब लोगों को याद रखकर कहीं-न-कहीं तुलना भी करनी होगी और वह तुलना इस प्रकार से है। जमैका, जिसकी आबादी 28 लाख है, वह लगभग 88 मेडल्स ले जा चुका है, जिनमें से 26 गोल्ड मेडल्स हैं। इथियोपिया की आबादी 126 मिलियन है, वह हमारे बिहार से भी छोटा देश है, वहाँ लगभग 58 मेडल्स आए हैं, जिनमें से 23 गोल्ड हैं। साउथ अफ्रीका, जिसकी आबादी 60 मिलियन है, वह हमारे जिले से, यानी सारण से लगभग दो गुना साइज़ का होगा, वहाँ लगभग 91 मेडल्स आए, जिनमें से 27 गोल्ड हैं। ताइवान की आबादी 23 मिलियन है, जिसने 120 मेडल्स लाए हैं, जिनमें से 28 गोल्ड हैं। आप अमेरिका, जर्मनी, फ्रांस, रशिया आदि देशों का छोड़ दीजिए क्योंकि यह सूची अलग है। हम लोग अपने आप को कई बार कमजोर भी महसूस करते हैं, लेकिन हमें विश्वास है कि देश के प्रधानमंत्री जी के नेतृत्व में और आने वाले दिनों में हमारे बीच में जो प्रतिस्पर्धाएं हैं, उनको लेकर हम आगे बढ़ेंगे।

महोदय, इसका एक वाणिज्यिक दृष्टिकोण भी है। अगर आप एक ओलम्पिक्स की तैयारी करते हैं, तो उस देश में जो निवेश आता है, अगर हम लोग लंदन ओलम्पिक्स को देखें, तो तीन साल के भीतर सवा लाख करोड़ रुपए का निवेश आया, रियो का देखें, जहाँ ओलम्पिक्स हुआ, वहाँ लगभग 1 लाख 12 हजार करोड़ रुपए का निवेश आया, टोकियो ओलम्पिक्स में एक लाख सात हजार करोड़ रुपए का निवेश आया। इस तरह से, ओलम्पिक्स में बहुत निवेश आता है। इसके साथ-साथ, आने वाले दिनों में कई चीजों का विस्तार भी होता है।

कॉमनवेल्थ गेम्स के बारे में हम लोग बहुत चर्चा करते हैं, उसमें कमियाँ हुई होंगी, जाँच कमेटी बैठी होगी, लोग जेल गये होंगे, लेकिन अंततोगत्वा हमें इस बात का तो स्मरण करना ही होगा कि एक बड़े इवेंट के आने के कारण, मुझे याद है जब मैं वाजपेयी जी की सरकार में सिविल एविएशन मिनिस्टर था, उस समय बात हो रही थी। यह कॉमनवेल्थ गेम्स शायद वर्ष 2010-11 में हुआ था। मैं माननीय प्रधानमंत्री जी के पास गया, तो मैंने उनसे कहा, उस समय कॉमनवेल्थ गेम्स की चर्चा शुरू हो गई थी, उस समय ब्रजेश मिश्रा उनके प्रिंसिपल सेक्रेट्री हुआ करते थे, उनके सामने बात हो रही थी। मैं उस समय भारत सरकार में नया-नया मंत्री बना था और मेरे पास सिविल एविएशन का प्रभार था। जब मैंने कहा कि आने वाले दिनों में भारत में कॉमनवेल्थ गेम्स होने वाले हैं, उसमें हमें नये एयरपोर्ट्स की जरूरत होगी, तो वाजपेयी जी ने उस विषय को सुना। उन्होंने कहा कि रूड़ी जी यह क्या कह रहे हैं, मैंने कहा- साहब, बड़ा एयरपोर्ट बनाने के लिए इन्हें प्राइवेटाइज करना होगा। उस समय वर्ष 2003 में श्री अटल बिहारी वाजपेयी जी ने कहा कि रूड़ी जी जो बात कह रहे हैं कि अगर देश को बढ़ाना है, देश में कॉमनवेल्थ गेम्स होगा, देश में ओलम्पिक्स होगा, तो हमें खूबसूरत हवाई अड्डों की जरूरत पड़ेगी। उसी दिन चाहे दिल्ली या मुम्बई का हवाई अड्डा हो या बेंगलुरू-देवनाली हवाई अड्डा हो या शमसाबाद-हैदराबाद हवाई अड्डा हो, उस दिन अटल बिहारी वाजपेयी जी ने उनकी नींव रखी क्योंकि उन्हें लगा कि आने वाले दिनों में कॉमनवेल्थ गेम्स होंगे। आज हमारे देश के प्रधानमंत्री वर्ष 2036 के लिए ओलम्पिक गेम्स का बिड करना चाहते हैं। भारत में गुजरात भी है, बिहार भी है।? (व्यवधान) आपने कहा बिहार में, हमारे मित्र वहाँ बैठे हुए हैं। मेरा चुनाव तो राष्ट्रीय जनता दल के विरुद्ध था। उससे आप चार लोग जीतकर आए हैं। मैं भी पिछले 40 सालों से उसी पार्टी से लड़ रहा हूँ। लेकिन थोड़ी पढ़ाई-लिखाई तो जरूर करनी चाहिए और अपने राज्य के प्रतिभाओं को पहचानना चाहिए। उन्होंने कहा कि बिहार से ओलम्पिक्स में कोई भी खिलाड़ी नहीं गया है। महोदय, आपसे विनती है कि हमारी एक बेटी है, जो बिहार में एमएलए है, उसका नाम श्रेयसी सिंह है, वह पेरिस ओलम्पिक्स में ट्रैप शूटिंग में जा रही है। इसलिए आप उसमें संशोधन कर लीजिए। आप भूल गये हैं। वह हमारी बेटी है। दिग्विजय सिंह सांसद हुआ करते थे, वह उनकी बेटी है। वह ट्रैप शूटिंग में परफॉर्म करती है और वह हमारे यहाँ

एमएलए है, जो वहाँ जा रही है। इसलिए आप थोड़ा संशोधन कर लीजिए। राष्ट्रीय जनता दल के लोगों से मेरा अनुरोध है कि थोड़ा पढ़ाई-लिखाई शुरू कीजिएगा तो ठीक-ठाक रहेगा।

लेकिन राजनीति में इतना चलता है। कोई बात नहीं है। हम लोग थोड़े सीनियर हैं, आप लोग आए हैं, तो हम लोग गाइड कर देंगे, कोई दिक्कत नहीं है। थोड़ा-बहुत तो चलता ही है।

आप लोग मेरिट की बात कहते हैं। हमारे सामने टोपी पहनकर एक व्यक्ति बैठे हैं, हाउस में किसी को पता ही नहीं है, इस सदन में भी तो ओलम्पियन बैठा हुआ है। यहाँ पर प्रसून बनर्जी साहब बैठे हुए हैं, ये भी ओलम्पिक्स के खिलाड़ी हैं, इनको बधाई देनी चाहिए। इसके साथ ही असलम शेर खान हैं, जो मंत्री भी रहे, वे हॉकी खेलते थे और वे भी ओलम्पियन रहे हैं। पी. टी. ऊषा हमारे बीच आईं, वे एथलेटिक्स में आईं, वह भी ओलम्पियन रही हैं। हमारे बीच में डॉ. करणी सिंह, जो वर्ष 1952 से 1977 तक यहाँ रहे, वे बीकानेर से थे। छ: बार इन्होंने ओलंपिक्स में पार्टिसिपेट किया है। रेस्लिंग में 1960 में दारा सिंह जी को कौन नहीं पहचानता? हमारे बीच में राज्यवर्धन जी थे, जो कल तक भारत सरकार में मंत्री थे, आज बड़ी अच्छी सरकार में, जयपुर में हैं। वे वहां मंत्री हैं, वे भी ओलंपियन रहे हैं। मैं कर्नल राज्यवर्धन सिंह राठौड़ के बारे में कह रहा हूं। हमारे यहां नेताओं में हुनर का अभाव कहां है? लेकिन लोग कई बार छोटी राजनीति में पड़ जाते हैं। अभी तो अगले चुनावों में पांच साल का समय है। थोड़ी बड़ी राजनीति करके इस देश को हम अगले ओलंपिक्स में आगे लेकर चलें। ललन बाबू सामने बैठकर बिहार के बारे में सोच ही रहे हैं। श्री दिलीप तिर्की को क्या हम सब भूल गए होंगे? वर्ष 1996 में, वर्ष 2000 में एटलांटा में और वर्ष 2004 में एथेंस में, ये सब लोग ऐसे हैं, जिन लोगों ने यह काम किया है।

अगर राजनीतिक रूप से विश्लेषण किया जाए, तो आप आरोप लगा देते हैं कि दौड़ते क्यों नहीं हो? ओलंपिक्स में बहुत आगे क्यों नहीं हो? 40-50 साल तो तुमने मेरे पैरों में जंजीर बांधकर रखी हुई थी। अब हमने इन दस सालों में जंजीर को खोला है, तो तेज गति से दौड़ने में थोड़ा समय लगता है। ? (व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON : Please conclude the speech.

? (*Interruptions*)

श्री राजीव प्रताप रूडी **:** श्रीमान, आज तो पहला ही दिन है, पांच साल खींचना है। ? (व्यवधान) मेरा आपसे अनुरोध है कि दाएं-बाएं मत सुनिए, आप सीधे मेरी ही बात सुनिए। ? (व्यवधान) दाएं-बाएं सुनने से गड़बड़ हो जाती है। मैं अपनी बात खत्म करने वाला हूं। अभी तो थोड़ा ही समय हुआ है, अभी तो पांच साल काटने हैं। थोड़ा-थोड़ा करके इंट्रोडक्शन तो होने दीजिए।

सभापति महोदय, मैं अधिक समय नहीं लूंगा। मैं यह कहूंगा कि यह सदन अपने आप में एक ऐसा सदन है, जहां हम सब लोग बहुत मेहनत के बाद आते हैं। ईश्वर की असीम कृपा होती है, जनता की कृपा होती है, तब हम यहां आकर बैठते हैं। लगभग 250-275 ऐसे सदस्य थे, जो हमारे साथ बैठते थे। राजनीति पर इसलिए बोलना जरूरी है, क्योंकि बाकी सब चीजों में फेयरवेल होता है। अफसर रिटायर होते हैं, तो फेयरवेल होता है। टीचर्स रिटायर होते हैं, तो फेयरवेल होता है। पॉलिटिक्स ऐसी जगह है, जहां अगर आप हारे, तो दोबारा आपका दर्शन नहीं हो पाएगा, आपका फेयरवेल नहीं हो पाएगा। जो कैबिनेट मिनिस्टर हारकर चले गए, जो कल तक आगे बैठते थे, जो माननीय सांसद, वरिष्ठ लोग थे, वे हारकर चले गए। अत: यहां किसी का फेयरवेल नहीं होता है। अत: जिस सदन में फेयरवेल नहीं होता है, उसमें कम से कम बोलने की पूरी अनुमति तो देकर रखिए। ? (व्यवधान) लोक सभा,

राज्य सभा में थोड़ा माइग्रेशन होता है, लेकिन पॉलिटिक्स में फेयरवेल नहीं होता है, बस ?समाप्त? होता है। चीफ मिनिस्टर होते हैं, उसके बाद जीरो हो जाते हैं, कोई फेयरवेल नहीं होता है।

अत: अधिकारियों से हम लोगों की जब तुलना होती है, तो मार्जिन बड़ा कम होता है। लेकिन जिसका फेयरवेल नहीं होता है, उसकी मान्यता अधिक होती है, क्योंकि हम लोग बड़ा रिस्क लेकर आते हैं, बड़ी मेहनत करके आते हैं। हम पांच-दस सालों तक गांवों-देहातों में उन शब्दों को सुनकर आते हैं। अभी मैंने अपने यहां एक कॉम्पिटिशन कराया, जो कि देश का पहला कॉम्पिटिशन था। मेरे यहां देश का सबसे सुंदर तालाब है, हमने उसको सजाया और उसमें ग्रामीण क्षेत्र की तैराकी प्रतियोगिता कराई। हमारे स्विमर्स वहां दिखाई दे रहे थे, हुनर वहां दिखाई दे रहा था, लेकिन 0.1 प्रतिशत अगर हम लोग पैसा खर्च करेंगे, पैसे का अभाव है, सरकार की अन्य कमिटमेंट्स हैं, लेकिन फिर भी हम विश्वास दिलाते हैं कि भारत की सरकार, हमारा मंत्रिमंडल, हमारे देश के प्रधान मंत्री की 2036 की तैयारी है। हम सबको मिल जुलकर दुनिया में एक अभियान चलाना चाहिए। मांझी जी, हमें ऐसा अभियान चलाना चाहिए कि पूरी दुनिया में भारत की जो पहचान बनी है, 2036 का ओलंपिक्स भारत में हो, चाहे कहीं भी हो, गुजरात में हो, औरंगाबाद में हो, बिहार में हो, लेकिन यह प्रेरणा और मोमेंटम पूरी दुनिया में हमें बनाना चाहिए।

आज देश में प्रधान मंत्री जी के नेतृत्व में ऐसा वातावरण बना है। हम सभी सांसदों को खेल के मामले में आगे बढ़-चढ़कर इस देश के उस गौरव को प्राप्त करने के लिए कदम उठाने होंगे। वर्ष 2036 में हममें से कितने लोग यहां रहेंगे, इसकी कोई गारंटी नहीं है, लेकिन आज हम योजना बनाएंगे और 2036 की बिड लेंगे, तो शायद यह आपकी और हमारी बात आने वाली तैयारी का गौरव बढ़ा सकेगी।

इन्हीं शब्दों के साथ मैं आपका आभार व्यक्त करता हूं।

धन्यवाद।

मोहम्मद रकिबुल हुसैन **(धुबरी) :** माननीय सभापति महोदय, थोड़ी देर पहले हमारी पार्टी ने हमें बोलने के लिए कहा कि आपको खेल के बारे में कुछ बोलना है। हमने सोचा कि अचानक ऐसा क्या आ गया, हम तो एजेंडा देखकर आये थे। बाद में देखा कि सप्लीमेंटरी लिस्ट ऑफ बिजनेस में Discussion under Rule 193 में लिखा है कि Discussion on India?s preparedness for the upcoming Olympic games. हमने पार्टी से कहा कि हमें इस पर बोलने के लिए क्यों बोला है? हमसे बोला गया कि आप खेल से जुड़े हुए आदमी हैं, आप खिलाड़ी थे। हम ओलम्पिक असम में ट्रेजरार थे, जनरल सेक्रेटरी भी थे और जब तरुण गोगोई जी चीफ मिनिस्टर थे, उस समय हम लोगों ने अच्छा करके वहाँ पर स्टेट गेम्स किए थे। उस समय दुनिया के बड़े-बड़े खेल में लगे हुए आदमी आकर बोले थे कि असम जैसे एक छोटे से राज्य में इतना अच्छा इंफ्रास्ट्रक्चर आप लोगों ने कैसे तैयार किया। उस समय फाइनेन्शियल क्राइसिस भी था। हम खेल के लगे हुए आदमी हैं। असम से दो ऑफिशियल और दो खिलाड़ी अभी ओलम्पिक्स में जा रहे हैं। हम उन्हें बधाई और शुभकामनाएं देकर आए हैं। यहाँ आकर हमने देखा है कि?? preparedness for the upcoming Olympic games?. It means that we are not prepared. सरकार से हम दरख्वास्त करना चाहते हैं, अनुरोध करना चाहते हैं कि यह हेडलाइन थोड़ा गलत है। आप थोड़ा इसे देखिए। यह ऐसा होना चाहिए था : ?Best wishes to the participants of the upcoming Olympic games?. टीम जा रही है, उसके बाद अगर अभी प्रीपेयर नहीं हैं, आजकल सोशल मीडिया में दुनिया इसे देखेगी तो वे क्या सोचेंगे कि हम लोग प्रीपेयर नहीं हैं। इसीलिए

हम आपके जरिये सरकार से दरख्वास्त करते हैं कि यह जो India?s preparedness for the upcoming Olympic games के बारे में लिखा है, उसे चेंज करने की जरूरत है या नहीं है, उसे आप देखिए।

सर, हमने बोला है कि हम खेल से जुड़े हुए आदमी हैं, इसीलिए हम सिर्फ बेस्ट विशेज देंगे, प्रीपेयर्डनेस के बारे में हम कुछ नहीं बोलेंगे, क्योंकि all are prepared. हम लोग जानते हैं कि इंडिया की परफॉरमेंस अच्छी होगी, मेडल्स भी हम लोग अच्छी तरह से जीतेंगे, यह हम लोगों की बेस्ट विशेज हैं। हम अपने को खेल से जुड़ा हुआ आदमी बार-बार बोल रहे हैं, इसीलिए हम एक बात बोलना चाहते हैं। हम अभी ओलम्पिक्स के बारे में चर्चा कर रहे हैं। हम जो बोलना चाहते हैं, वह विषय हिन्दुस्तान के आम आदमी के खेल के बारे में है। हम गरीब लोगों के खेल के बारे में बोलना चाहते हैं, जिसकी हिन्दुस्तान में उत्पत्ति हुई। हम ऐसे एक खेल के बारे में बोलना चाहते हैं। उस खेल का नाम कैरम है। बहुत लोग कैरम के ऊपर हँसते हैं। आज कैरम की चर्चा होने के बाद हमारे जो गरीब लड़के हैं, जो गाँव में अच्छा कैरम खेलते हैं, उन लोगों को भी थोड़ा अच्छा खेलकर घर चलाने का एक माहौल बनाने का अवसर मिलेगा। बहुत से लोग नहीं जानते हैं कि कैरम खेलने के बाद नौकरी मिलती है। नौकरी कहाँ-कहाँ मिलती है, एयर इंडिया में कैरम के खिलाड़ी को नौकरी मिलती है, बीएसएनएल में नौकरी मिलती है, कैग में नौकरी मिलती है, डीएसएसएसबी में मिलती है, डिपॉर्टमेंट ऑफ एटॉमिक एनर्जी में मिलती है, इरिगेशन में मिलती है, एलआईसी, एसबीबीपी में मिलती है, मेजर पोर्ट्स पर नौकरी मिलती है, नाबार्ड, स्पोर्ट्स एंड कल्चर में नौकरी मिलती है, पीएसयूज में मिलती है, रिजर्व बैंक ऑफ इंडिया में मिलती है, एएआई, आदि में मिलती है। इसे गरीब लड़का, लड़की खेलते हैं। यह भी बहुत से लोग नहीं जानते हैं, हम जानते हैं कि कैरम खेलकर अर्जुन अवार्ड भी मिलता है। तमिलनाडु के मरिया इरुदयम को अर्जुन अवार्ड मिला है। आप जरा चेक कर लीजिए। सभापति जी, मैं इसीलिए आपको कहना चाहता हूं कि जो भी प्रिप्रेशन्स की गई हैं, वे ठीक होंगी।

HON. CHAIRPERSON : Other hon. Members are also there to speak. Please conclude.

मोहम्मद रकिबुल हुसैन **:** सभापति जी, हमारी पार्टी से एक आदमी बोला है।

माननीय सभापति **:** अभी दो और माननीय सदस्य भी बोलेंगे। Two more hon. Members are there to speak.

मोहम्मद रकिबुल हुसैन **:** सभापति जी, मैं अपनी बात समाप्त करने जा रहा हूं। ओलम्पिक्स में जो खेल होता है, वह केटेगिरी-3 में होता है। यह टेक्टिकल बात है। फर्स्ट केटेगिरी को हाई प्रॉयरिटी कहते हैं। सैंकेंड केटेगिरी को सैकेंड प्रॉयरिटी कहते हैं और थर्ड को अदर्स कहते हैं। कैरम खेल अभी तक प्रॉयरिटी लिस्ट में नहीं है। आपने ज्यादा समय नहीं दिया है, इसलिए अपनी बात समाप्त करने जा रहा हूं। आपने जो क्राइटीरिया रखा है, कैरम उसे फुलफिल करता है।

17.21 hrs (Shri Jagdambika Pal *in the chair*)

Sir, despite All India Carrom Federation fulfilling all the criteria of priority category, carrom is still in ?Others? category.

HON. CHAIRPERSON: You have already taken two minutes. Please conclude.

MD. RAKIBUL HUSSAIN : I request the Government to include carrom as a priority game.

श्री मलविंदर सिंह कंग **(**आनंदपुर साहिब**) :** सभापति जी, मैं आपका आभारी हूं कि आपने मुझे एक अहम विषय पर बोलने का अवसर दिया है। हमारे देश की ओलम्पिक्स के लिए जो टीम जा रही है, उन सभी प्लेयर्स को मैं बहुत-बहुत शुभकामनाएं देता हूं और उम्मीद करता हूं कि हमारे देश की ओलम्पिक्स में जो परफोर्मेंस रहेगी, वह बेहतर रहेगी।

सभापति जी, मैं आपके माध्यम से दो-तीन बुनियादी चीजें सदन के सामने रखना चाहता हूं। माननीय मंत्री जी सदन में बैठे हैं। मैं स्वयं स्पोर्ट्स मैन रहा हूं। जब हम ओलम्पिक्स के लिए पूरे इंटरनेशनल मॉडल को स्टडी करते हैं तो देखते हैं कि चाइना ने बहुत बेहतर परफोर्म किया है। हमारे यहां जब कोई प्लेयर नेशनल और यूनिवर्सिटी लेवल पर मेडलिस्ट बन जाता है, तब उसे ओलम्पिक्स के लिए प्रीपेयर करते हैं। नर्सरी लेवल पर, कम आयु में यदि हम प्लेयर्स को आइडेंटीफाई करें तो स्थिति बहुत बेहतर हो सकती है। हमारे देश में टेलेंट की कमी नहीं है। आप देख सकते हैं कि हमारे देश में अलग-अलग राज्यों में अलग-अलग तरह का टेलेंट है। जेनेटिक का इसमें बहुत महत्वपूर्ण रोल है, डाइट का भी बहुत महत्वपूर्ण रोल है, ट्रेनिंग का भी बहुत महत्वपूर्ण रोल है और इसमें इंफ्रास्ट्रक्चर का भी बहुत महत्वपूर्ण रोल है। अगर हम पूरे देश के अलग-अलग हिस्सों में जाएं, तो देखेंगे कि कहीं हाइट बहुत ज्यादा है और कहीं किसी अन्य प्रकार का टेलेंट है। यदि हम नार्थ-ईस्ट की बात करें तो वहां फुटबाल का टेलेंट बहुत है। पंजाब की बात करें, तो एक समय ऐसा था कि फुटबाल और हाकी के मैक्सिमम प्लेयर पंजाब से ही रहे हैं। बॉस्केट बाल में हमारे पास बहुत अच्छा टेलेंट है। मेरे संसदीय क्षेत्र में बलाचौर एक छोटा-सा विधान सभा क्षेत्र है। हर साल वहां से चार से पांच प्लेयर्स हमारे देश को वॉलीबाल में रिप्रेजेंट करते हैं, लेकिन वहां कोई इंफ्रास्ट्रक्चर नहीं है। मेरे संसदीय क्षेत्र में एक मालपुर शहर है। वर्ष 1970 के दशक में पूरी फुटबाल टीम मालपुर कस्बे की थी, लेकिन वहां भी इंटरनेशनल लेवल की सुविधाएं नहीं हैं।

महोदय, मेरा आपके माध्यम से मंत्री जी से निवेदन है कि छोटी उम्र में पूरे देश में एक ऐसा कार्यक्रम चलाएं और छोटे-छोटे बच्चे आइडेंटीफाई करके, जिनमें टेलेंट है, उनकी ट्रेनिंग, डाइट आदि का खयाल रखें ताकि वे नेशनल, इंटरनेशनल लेवल का कम्पीटिशन लड़ सकें। हम वर्ष 2036 के ओलम्पिक्स के लिए हम तैयारी कर रहे हैं, मैं भगवान से भी प्रार्थना करता हूं और हमारी इच्छा है कि हमारे देश को नुमाइंदगी मिले और भारत उसमें बेहतर प्रदर्शन करके ज्यादा मेडल प्राप्त करके पदक तालिका में दुनिया में पहले तीन देशों में आए।

दूसरा, मेरा आपके माध्यम से आग्रह है, चूंकि स्पोर्ट्स के प्लेयर्स बेसिकली रियल हीरो होते हैं। पंजाब से बलवीर सिंह सीनियर हुए हैं, जिन्होंने देश के लिए लगातार तीन गोल्ड मेडल्स जीते हैं। मेरा आपके माध्यम से भारत सरकार से आग्रह है कि जो हमारे रियल हीरो हैं, इन लोगों को भारत रत्न देना चाहिए। बलवीर सिंह सीनियर को भारत रत्न देना चाहिए, ताकि हमारी आने वाली पीढ़ी को उनसे प्रेरणा मिले।

तीसरा, किसी ज़माने में जब हम इंटर-यूनिवर्सिटी खेलने जाते थे या इंटर-स्कूल खेलने जाते थे, तब हमारी भारतीय रेल पूरा रिज़र्वेशन स्पोर्ट्स टीम को देती थी। सर, वह प्रोविज़न भी पिछले कुछ सालों में बंद कर दिया गया है।

चौथा, जो कि बड़ा महत्वपूर्ण पॉइंट है, जो हमारे एसोसिएशंस हैं, मैजोरिटी ऑफ एसोसिएशंस में नॉन-प्लेयर्स अथॉरिटी के हेड बने हुए हैं, जिनको स्पोर्ट्स की बहुत ज्यादा गंभीरता से समझ नहीं है। यह पूरा तौर-तरीका भी बदलने की जरूरत है कि जो रियल प्लेयर्स हैं, वे एसोसिएशंस को भी हेड करें। सर, हो क्या रहा है कि बहुत सारे एसोसिएशंस के मसले हाई कोर्ट में हैं, सुप्रीम कोर्ट तक में लीगल लड़ाई लड़ी जा रही है और हमारे प्लेयर्स उसमें पिस रहे हैं।

माननीय सभापति **:** आप कृपया संक्षिप्त में सुझाव दे कर अपनी बात समाप्त करें।

? (व्यवधान)

श्री मलविंदर सिंह कंग **:** सर, मैं कनक्लूड कर रहा हूँ। यह मेरी मेडन स्पीच है। मैं फर्स्ट टाइमर हूँ।

*Sir, this is my maiden speech. I appeal to you to kindly give me more time.

Sir, the 2036 Olympic Games should be hosted by India. Government should do the needful in this matter. Separate clusters of separate regions in the country should be made and local talent should be identified, trained and encouraged. Players who are below 10 years or 15 years should be trained.

I hope that 2036 Olympic Games will be allotted to India and Arvind Kejriwal ji will be the Prime Minister at that time. In Punjab, CM Bhagwant Mann ji has undertaken an initiative. Till, 2000, Punjab was No. 1 in sports. पिछले 20 सालों में अकाली और कांग्रेस सरकारों ने स्पोर्ट्स के लिए कुछ नहीं किया ।

The Bhagwant Maan Government is providing jobs to all sportsmen and sportswomen from Punjab who win medals for the country. So, our players who win medals in international games must be provided with jobs. This must be ensured.***** मेरी भारत सरकार से यही विनती है। धन्यवाद ।

श्री कौशलेन्द्र कुमार **(**नालंदा**) :** सभापति महोदय, आपने मुझे ओलंपिक्स की तैयारी पर नियम-193 के तहत हो रही चर्चा में भाग लेने का मौका दिया, इसके लिए मैं आपका बहुत-बहुत धन्यवाद करता हूँ। काफी लोगों के सुझाव आ चुके हैं। ओलंपिक्स की तैयारी के लिए सरकार के द्वारा जो चर्चा कराई जा रही है, उसके लिए मैं मंत्री जी को भी बधाई और धन्यवाद देता हूँ। हम लोग चौथी बार के सांसद हैं और ओलंपिक खेल होने जा रहे है, उस पर चर्चा करने का जो अवसर मिला है, उसके माध्यम से मैं सभी खिलाड़ियों को शुभकामनाएं देता हूँ। जब से मोदी जी की सरकार पिछले दस सालों से हैं, तब से ?खेलो इंडिया? के तहत हर गांव, हर प्राथमिक विद्यालय एवं हाई स्कूल व कॉलेज तक ?खेलो इंडिया? की छाप हर जगह है। हम लोग भी सांसद हैं। लगातार ?खेलो इंडिया? के तहत जहां भी खेल होते हैं, बच्चे और बच्चियां कई तरह के खेल खेलते हैं। उत्साह इससे बढ़ा है। लेकिन पिछले दशक के बारे में अभी रूडी जी विस्तार से चर्चा कर रहे थे कि आज़ादी से पहले और बाद हम कितना आगे बढ़े हैं, मतलब पीछे हैं, अभी आगे बढ़े नहीं हैं, उसकी तैयारी कर रहे हैं। हम लोग अब वर्ष 2036 में होने

वाले ओलंपिक खेलों की तैयारी करें। अगर वर्ष 2024 में प्रदर्शन अच्छा नहीं रहे तो वर्ष 2036 के ओलंपिक खेलों की तैयारी करें। अगर पूरे देश के सांसदों का प्रयास भरपूर रहेगा तो अगले ओलंपिक्स में निश्चित रूप से चार चांद लगेंगे, इसका मुझे भरोसा और विश्वास है। अभी जो लगभग 117 खिलाड़ी पेरिस ओलंपिक्स में भाग लेने के लिए चयनित हुए हैं, उनमें बिहार की भी एक बेटी है। मैं सभी खिलाड़ियों को बधाई और शुभकामानाएं देता हूँ कि आप लोग देश के लिए मेडल ले कर आइए। हम लोगों की बहुत सारी शुभकामनाएं हैं। खेलों के प्रति लोगों को कैसे आगे बढ़ाया जाए, यह काम सिर्फ भारत सरकार के करने से ही नहीं होगा। सभी राज्य सरकारों के साथ बैठ कर प्रयास करना चाहिए। प्राथमिक विद्यालय से लेकर इंटरमीडिएट स्कूलों तक इसकी व्यवस्था होनी चाहिए। कॉलेज और स्कूल में खेलने की उचित व्यवस्था होनी चाहिए। हम ग्रामीण परिवेश से आते हैं। बहुत सारे स्कूल्स में खेल का मैदान नहीं है। वहां खेलने की जगह नहीं है। सरकार को इसकी व्यवस्था करने की जरुरत है। हम यह नहीं कह रहे हैं कि ओलंपिक्स में 117 लोग जा रहे हैं, बल्कि हम चाहते हैं कि और लोग भी जाए तथा वहां से मेडल्स लेकर आएं। आज जिस तरह से लोगों में उत्साह है, इस उत्साह के लिए बिहार में आदरणीय नीतीश कुमार जी ने एक खेल नीति बनायी है। अभी हमारे साथी हरियाणा के बारे में बता रहे थे। वहां तो बहुत पहले से ही मेडल्स आ रहे हैं। खेल की नीति बनानी चाहिए कि मेडल्स लाइए और नौकरी पाइए। यह हमारे बिहार में भी चल रहा है और कई लोगों को नौकरी मिली है। मुझे लगता है कि हजारों लोगों को नौकरी मिली है। वहाँ बच्चों को प्रोत्साहन दिया जा रहा है। इस तरह से हर राज्य सरकार और केंद्र सरकार को काम करने की जरुरत है। हमारे खिलाड़ी ओलंपिक्स में मेडल्स लेकर आएंगे तो देश का नाम रोशन होगा। हमारे खिलाड़ी देश के लिए काम करते हैं। वह पूरी तरह से मेहनत करते हैं। चाहे कोई भी खिलाड़ी हो, वे समर्पित होकर मेहनत करते हैं।

महोदय, हम लोग छोटे खिलाड़ी रहे हैं, हाई स्कूल और कॉलेज के खिलाड़ी रहे हैं। वहां हम लोग देखते थे कि खिलाड़ी को पूरे परिवार से कोई मतलब नहीं होता था। वे खेलने में पूरा समय देते थे। जो लोग खेल के प्रति जागरूक हैं, जिनमें खेल के प्रति लगन है, उनको और आगे बढ़ाने की जरुरत है। हर क्षेत्र में पारदर्शिता होनी चाहिए। कई तरह के आरोप लग रहे थे, आज आरोप लगाने की जरुरत है, बल्कि सरकार, चाहे पक्ष की हो या विपक्ष की हो, सबको साथ-साथ चलना चाहिए। हमें एक साथ होकर अपने-अपने क्षेत्रों में खेल के प्रति बच्चों को आगे बढ़ाना चाहिए। इसके लिए हम सब लोग समर्पित हो। इससे हमारा लक्ष्य पूरा हो सकता है। हमारा अगला लक्ष्य वर्ष 2036 का ओलंपिक्स है। निश्चित रूप से खिलाड़ी ज्यादा मेडल्स हमारे देश में आएंगे। इससे हमारे खिलाड़ी आगे बढ़ेंगे। वे निश्चित रूप से देश के लिए काम करेंगे।

महोदय, मैं आपसे निवेदन करूंगा। हमारे संसदीय क्षेत्र में जहां अंतर्राष्ट्रीय विश्वविद्यालय है, उसी के बगल में अंतर्राष्ट्रीय स्टेडियम बन रहा है, एकैडमी बन रहा है। इन सभी चीजों पर हमें ध्यान देने की जरुरत है। इसके लिए हम सरकार से आह्वान करते हैं। केंद्र में हमारी सरकार है और बिहार में भी हमारी सरकार है। हमें खेल के प्रति लोगों को सजग करने की जरुरत है। निश्चित रूप से खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करने के लिए उन्हें सरकार हर चीज से लैस करे। इससे गांव के हमारे बच्चे आगे बढ़ेंगे। यही बात कह कर मैं अपनी बात को समाप्त करता हूं। बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री चंदन चौहान **(**बिजनौर**) :** धन्यवाद, अधिष्ठाता महोदय, इस ऐतिहासिक लोकतंत्र के मंदिर में आपने मुझे बोलने का आपने मौका दिया।

मान्यवर, नियम 193 के तहत आज ओलंपिक्स खेलों में भारत की तैयारियों पर चर्चा करने के इस मौके पर आपने प्रथम बार चुनकर आए सदस्य को बोलने का मौका दिया, इसके लिए मैं आपको धन्यवाद देता हूं।

मान्यवर, मैं बिजनौर लोक सभा क्षेत्र से चुनकर आया हूं। यहां हमेशा से, चाहे पूरा एनसीआर का एरिया हो, चाहे पंजाब, हरियाणा, पश्चिमी उत्तर प्रदेश का एरिया हो, चाहे ओलंपिक्स हो, कॉमनवेल्थ गेम्स हो, एशियन गेम्स हो या देश के लिए कोई भी प्रतिस्पर्धा हो, हमेशा देश का झंडा बुलंद करने का काम हमारे क्षेत्र के युवाओं और नागरिकों ने किया है। खेलों के विकास के लिए हमारे समाज ने और यहां बैठे सभी लोगों ने स्पोर्ट्स खासकर इस महत्वपूर्ण विषय पर जब चर्चा चल रही है, इस सदन के अंदर भी अगर हम सब मिलकर स्पोर्टसमैनशिप दिखाएंगे तो निश्चित रूप से समाज में एक बड़ा संदेश जाने का काम होगा।

मान्यवर, आपके माध्यम से पूरे सदन की भावना आज यहां देखने को मिली है। खेलों में हमारे खिलाड़ी देश के लिए मेडल्स जीत कर लाते हैं। यह सब पूरे देश का गौरव है। इससे पूरे देश के लिए समर्पित होने का काम होता है। आदरणीय राजीव प्रताप रूडी जी ने यहां इसके बारे में अपनी बात कही। हम सब तो इनको देखकर बड़े हुए हैं, चाहे कीर्ति आजाद जी हों, बनर्जी साहब हों, यूसुफ पठान साहब हों, पी.टी. ऊषा जी हो, सचिन तेंदुलकर जी हों, मैरी कॉम जी हों, इन सब लोगों ने इस देश का गौरव बढ़ाने के साथ-साथ सदन का गौरव बढ़ाया है। ये लोग जिम्मेदारी से यहां बैठे हैं। आज जब यहां यह सकारात्मक चर्चा हो रही है, तो आदरणीय प्रधान मंत्री जी की गम्भीरता यहां देखने को मिलती है कि इस विषय पर सरकार कितनी गम्भीर है। चाहे वर्ष 2024 के ओलम्पिक्स हों या आने वाले समय में, जब भारत वर्ष 2036 के ओलम्पिक्स के लिए बिड करने जा रहा है, हम एक राय बनाकर पूरे सदन से संदेश देने का काम करेंगे तो निश्चित रूप से एक बड़ा संदेश समाज और पूरे विश्व में जाने का काम करेगा।

मान्यवर, मैं पश्चिमी उत्तर प्रदेश से आता हूं, वहां स्पोर्ट्स यूनीवर्सिटी बनाने का काम हो रहा है। प्रधान मंत्री जी खुद उस यूनीवर्सिटी का उद्घाटन करके आए थे। यह उनकी गम्भीरता को दर्शाता है। जो प्रतिभायें हमारे देश में गलियों, गांवों में छिपी बैठी हैं, उनको निखारकर आगे लाने के प्रति सरकार की प्रतिबद्धता इससे दिखाई देती है। ऐसे समय में अगर उस यूनीवर्सिटी के लिए स्टेट गवर्नमेंट से मिलकर केंद्र भी गम्भीरता के साथ विचार करेगा, तो निश्चित रूप से इस कार्य को भी गति मिलने का काम होगा। मैं आपके माध्यम से सदन को इस भावना को अवगत कराना चाहता हूं।

मैं अपने नेता आदरणीय जयन्त चौधरी जी को धन्यवाद देना चाहता हूं। अगर मैं गलत न हूं तो शायद वे पहले सदस्य होंगे, जिन्होंने अपनी पूरी सांसद निधि खेलों के लिए, खिलाड़ियों के लिए समर्पित करने का काम किया। जो राज्य सभा के मेंबर हैं, जितनी भी निधि उन्हें पूर्व में मिली है, उन्होंने सब खिलाड़ियों के उत्थान के लिए दी। उन्होंने हमेशा खिलाड़ियों का मनोबल बढ़ाया। चाहे जगह-जगह, गांव-गांव जाकर प्रोत्साहित करने का काम हो, कॉमनवेल्थ गेम्स में हमारे खिलाड़ी जीतकर आए हों, ऐसे समय में हम एक सामाजिक भावना बनाकर चलेंगे। मुझे ऐसा विश्वास है कि इस पहल पर हम सब मेंबर्स एकमत होकर उसे आगे बढ़ाने का प्रयास करेंगे।

आप सब लोग सकारात्मक हैं और इस चर्चा में मैं यह कहना चाहूंगा कि बिना द्रोणाचार्यों के एकलव्य निकलकर नहीं आएंगे। यह सच्चाई है कि जो परख डायमंड्स ढूंढने की जौहरी की होती है, वह सभी की नहीं होती। हमारे क्षेत्र में एक से एक द्रोणाचार्य हैं, उनकी परख भी हमें करनी पड़ेगी। मैं ज्यादा नहीं कहूंगा, क्योंकि समय की भी सीमा है और यह प्रथम बार है। ऐसा कोई विषय नहीं है, जिसे यहां बैठे सदस्य न जानते हों या कोई नया विषय हो।

खेलो इंडिया की योजना में लगभग 147 करोड़ रुपये बताए गए। हम विकसित भारत के लिए कोशिश कर रहे हैं। आदरणीय प्रधान मंत्री जी 2047 का विकसित भारत का सपना देख रहे हैं। भारत को निश्चित रूप से इन

मैडल्स की संख्या के साथ-साथ अपना परफार्मेंस बेटर करना पड़ेगा, तभी हम उस संकल्प को पूरा करने का प्रयास कर सकते हैं।

मान्यवर, कोई भी खिलाड़ी जो निपुण होता है, वह बेहतर अवसर कराए जाने से मिलता है। अच्छे मुकाबले मिलना और भव्य मंच अपने खिलाड़ियों के लिए सुनिश्चित करना हम सबकी जिम्मेदारी है। एंड ऑफ दी डे मैं इतना ही कहना चाहूंगा कि ?Practice makes a sportsman perfect?. इस चीज पर ध्यान देते हुए और अपने खिलाड़ियों का जो ओलंपिक्स में जा रहे हैं, मैं उन सभी पार्टिसिपेंट्स का मनोबल बढ़ाते हुए इस सदन को एक भावना और हिम्मत के साथ एक ध्वनि मत से हम सभी को समर्थन करना चाहिए। इस आशा के साथ समर्थन करना चाहिए कि हम ज्यादा से ज्यादा मेडल विश्व पटल पर जीत कर आएंगे। इन्हीं शुभकामनाओं के साथ, आपने मुझे बोलने का मौका दिया, मैं आपका धन्यवाद करता हूं।

श्री नवीन जिंदल (कुरुक्षेत्र) : माननीय सभापति महोदय, मैं आपका बहुत आभारी हूं, आपने मुझे इतने महत्वपूर्ण मुद्दे पर बोलने का मौका दिया। यह हम सभी के लिए गर्व की बात है कि भारत के इतिहास में पहली बार इतना बड़ा कंटिजेंट 117 खिलाड़ी पेरिस ओलंपिक्स में हिस्सा लेने के लिए जा रहे हैं। यह हम सभी के लिए बहुत गर्व की बात है। इसमें 17 बेटे और 47 बेटियां इसमें हिस्सा ले रही हैं। मैं हरियाणा से आता हूं, हरियाणा पूरे देश का केवल दो प्रतिशत जनसंख्या है, लेकिन इस कंटिजेंट के अंदर दो प्रतिशत जनसंख्या का योगदान बीस प्रतिशत है। उसमें भी बहुत खुशी की बात है यह है कि इन 24 खिलाड़ियों में 117 का बीस प्रतिशत बनता है, उसके अंदर 14 बेटियां हैं, 10 हरियाणा के बेटे हैं। यह हमारे लिए बहुत ही खुशी की बात है। अभी बहुत सारे माननीय सांसदों ने बहुत सारे विचार और सुझाव दिए।

आज की चर्चा का मुद्दा केवल पेरिस ओलंपिक्स का है। मैं खुद एक खिलाड़ी हूं, मैं एक सपना देखता था कि मैं भी एक दिन ओलंपिक में जाउंगा। मैं माननीय सदस्यों को आपके माध्यम से बताना चाहता हूं कि कोई भी देश अपने खिलाड़ियों को ओलंपिक्स में ऐसे ही नहीं भेज सकता। ओलंपिक्स में जाने के लिए आपको एक कोटा जीतना पड़ता है। वरना हमारा इतना बड़ा देश है, हम 117 की जगह एक हजार भी भेज सकते थे। लेकिन आपको कोटा जीतना पड़ता है, तभी ओलंपिक में जाने के लिए क्वालिफाई कर सकते हैं। ओलंपिक में जाना ही एक बहुत बड़ी बात है।

इस संसद के अंदर बहुत सारे ओलंपियन्स अभी भी बैठे हैं, यह भी हमारे लिए गर्व की बात है। इस ओलंपिक्स के लिए मैं शुभकामनाएं देना चाहता हूं, मैं माननीय मंत्री जी का आभारी हूं, स्पोर्ट्स मिनिस्ट्री, इंडियन ओलंपिक एसोसिएशन्स, स्पोर्ट्स अथॉरिटी ऑफ इंडिया सब मिलजुकर काम कर रहे हैं कि किस तरह से हमारे जो खिलाड़ी हैं, उनको अच्छी से अच्छी सुविधाएं दी जाएं। उनको अच्छे से अच्छे कोचेज उपलब्ध कराएं जाएं। दर्जनों फॉरेन कोचेज काम कर रहे हैं, फिजियोथेरिपिस्ट्स काम कर रहे हैं, साइकॉलोजिस्ट्स उनकी मदद कर रहे हैं, मस्सेर्स साथ जा रहे हैं, ओलम्पिक्स के जो खिलाड़ी जा रहे हैं, उनको हर तरह की सुविधा मिले, उनको हर तरह का सपोर्ट मिले।

माननीय सभापति जी, स्पोर्ट्स मिनिस्ट्री ने टारगेट ओलंपिक्स पोडियम स्कीम के अंदर जितने भी एलीट स्पोटर्स पर्सन हैं, उन सभी को हर तरह की सुविधा दी गई है, जो वह चाहते थे। अगर वह बाहर कोचिंग के लिए जाना चाहते थे, बाहर प्रैक्टिस के लिए जाना चाहते थे, उनको किसी विदेशी कोच की आवश्यकता थी, उनको सब कुछ

उपलब्ध कराया गया है। इसी के अंतर्गत स्पोर्टस मिनिस्ट्री ने एक ?मिशन ओलंपिक्स सेल? भी बनाया है, जो डेडिकेटड बॉडी है, जिसको डॉयरेक्टर जनरल स्पोर्टस अथॉरिटी ऑफ इंडिया हेड करते हैं। सभी के एफर्ट्स को कोऑडिनेट करते हैं ताकि हर प्रतिभाशाली खिलाड़ी को हर संभव सपोर्ट दी जाए। इसके लिए प्राइवेट सेक्टर का भी बहुत योगदान लिया है। पब्लिक प्राइवेट पार्टर्नशिप के अंतर्गत खेलों को प्रोत्साहित करने के लिए काम किया है। मैं उनका भी आभार व्यक्त करना चाहूंगा, इसमें खासकर जेएसडब्ल्यू ग्रुप ने इन्सपायर इंस्टीट्यूट ऑफ स्पोर्ट्स बनाया है, उसके अंदर बीस खिलाड़ी सीधे-सीधे सपोर्ट कर रहे हैं। इसके अलावा 21 शूटर्स को भी सपोर्ट कर रहे हैं। उसी के तर्ज पर ओलंपिक्स गोल्ड क्वेस्ट फाउन्डेशन है, जो बजाज फाउन्डेशन चला रहा है, मैं उनका भी बहुत आभारी हूं। इसी तरह से रिलायंस फाउन्डेशन, बीसीसीआई सभी अपना-अपना योगदान दे रहे हैं कि किस तरह से हमारा प्रदर्शन खेलों में अच्छा हो। खेलों के लिए देश के अंदर बहुत कुछ करने की आवश्यकता है। हम बहुत बार खेलों को इतना प्रोत्साहन नहीं देते। यह बात भी सही है कि बच्चों को बहुत कम उम्र से खेलों के प्रति उत्साहित करने की आवश्यकता है। मैं दिल्ली और पूरे देश में भी देखता हूं कि स्टेडियम्स तो बना देते हैं लेकिन इनमें खेलने का सामान नहीं होता है, कोचिस नहीं होते हैं, इस पर ध्यान देना होगा क्योंकि हमें वर्ष 2028, 2032 और 2036 के लिए तैयारी करनी है। मैं समझता हूं कि वर्ष 2024 के लिए बहुत अच्छी तैयारी की गई है। हम आशा करते हैं कि हमारे खिलाड़ियों का प्रदर्शन अच्छा होगा।

महोदय, जब हम खेलों की चर्चा करते हैं तो मैं समझता हूं कि खेल के लिए हमारी सर्वसहमति होनी चाहिए ताकि हम सब मिलजुलकर देश का गौरव बढ़ा सकें। कई बार मैं सुनता हूं कि खेलों को लेकर राजनीति शुरू कर देते हैं, एक-दूसरे पर कटाक्ष शुरू कर देते हैं तो मैं समझता हूं कि इस तरह के कटाक्ष करने से खेलों या खिलाड़ियों को प्रोत्साहन नहीं मिलता हैं। मेरा मानना है कि इसके लिए हम सब एकजुट होकर काम करें। माननीय प्रधानमंत्री जी ने ?खेलो इंडिया? की शुरूआत की है, मैं समझता हूं कि यह बहुत अच्छा कदम है। इसके तहत हम खेलों को बढ़ावा दिया जा रहा है। इसके अलावा ?कीर्ति प्रोजेक्ट? में बचपन से ही टैलेंट आइडेंटिफिकेशन पर काम किया जा रहा है, यह बहुत आवश्यक भी है। ये सब चीजें की जा रही हैं, लेकिन इसका रिजल्ट आने में समय लगता है।

महोदय, माननीय मंत्री मनसुख भाई जी ने जिस तरह से कोविड के दौरान अहम भूमिका निभाई थी, मुझे आशा है कि माननीय मंत्री जी उसी तरह से खेलों के प्रति भी बहुत अहम भूमिका निभाएंगे। इससे आने वाले समय में ओलिम्पिक्स में खेलों का प्रदर्शन अच्छा रहेगा। अगर हम सब मिलकर काम करेंगे और खिलाड़ियों को प्रोत्साहित करेंगे तो आने वाले समय में देश को आगे बढ़ा सकेंगे। खेल हमें बहुत कुछ सिखाते हैं। मैं समझता हूं कि 140 करोड़, जो कि देश जनसंख्या है, सभी की शुभकामनाएं और प्रार्थनाएं खिलाड़ियों के साथ होंगी जब ये पेरिस में प्रदर्शन करेंगे।

इन्हीं शब्दों के साथ, मैं सभी खिलाड़ियों को शुभकामनाएं देते हुए आपका आभार व्यक्त करता हूं कि आपने मुझे इस महत्वपूर्ण विषय पर बोलने का अवसर दिया। धन्यवाद।

SHRI NAVASKANI K. (RAMANATHAPURAM): Hon. Chairman Sir, Vanakkam.

I thank you for allowing me to take part in this Discussion held under Rule 193 for ensuring the success of Indian sportspersons in the world?s mega sports extravaganza, the Olympics. India having the largest population of the world is also having talented human resources. But there is a sea of difference when we compare the medals won by India in Olympics v*is-a-vis* the population of India.

Hockey has brought us so many gold medals. In Olympics, India has so far won 8 Gold Medals through Hockey. But during the last 40 years we were unable to fetch not even a single medal. After finding the reason for this debacle, this Government has not included Abha Khatua, holder of world ranking of 21 in shot-put, in the Indian contingent for Olympics although she won Gold in the Asian Athletic Championship held in 2023 under shot-put by creating a record throw of 18.60 metre. How Indian athletes are selected for taking part in Olympics? This Government should say openly how these sportspersons are selected. There is no transparency in this selection process. Talented should be selected to take part in Olympics representing India.

We should ensure more participation by India in the forthcoming Olympics and ensuring the winning tally of more Medals for India. This discussion aimed to bring repute to India in world sports is really appreciable. But I wish to register that how this Government had handled the Olympic medallists in the past. How this Government has handled the Olympic Medallists who staged agitations alleging sexual abuse by the then President of Wrestling Federation *?**

HON. CHAIRPERSON : No name will go on record.

SHRI NAVASKANI K. : I wish to remind you as to how the police personnel under the Union Government have handled the agitating sportspersons including the women wrestlers. Even the International Olympic Committee has condemned the way these wrestlers were treated and that Committee even had called for an unbiased enquiry into this matter. Unfortunately, other than Cricket all other games are not considered important in this country. In the past there were incidents where there was no ceremonial welcome accorded at the airports to those sportspersons returned home after winning international medals in games at international level. We should agree that even major sporting talent has not been yet identified. Especially in rural and backward areas, the sporting talent is yet to be identified which is really unfortunate. Government has the responsibility to identify them and take them to international arena. If they win medals, it is not only for them, it is a pride for the entire country as well.

Therefore, I urge that this Government should take part in nurturing these talents very well. Thank you.

SHRI KARTI P. CHIDAMBARAM (SIVAGANGA): Thank you very much, Sir. I will be very brief.

I join everybody in wishing the 117 athletes who are going to Paris to represent our great nation. I wish them very well. There is an interesting start. The top four States which have sent athletes to Paris are Haryana, Punjab, Tamil Nadu, and Uttar Pradesh. There is, actually, a strange commonality among all these four States. All these four States, actually, voted for the I.N.D.I Alliance in the recently concluded elections.

Sir, India has won a total of 35 medals in all the Olympics put together but a small country like Croatia, which only came into existence in 90s, has won 41 medals. The population of Croatia is about 38 lakhs, equal to the size of two Lok Sabha constituencies. So, if we really want to be an Olympic power, a couple of things need to be done. One, we need to broad-base sports participation and access to sporting facilities. The way to do it is to make sports a compulsory subject in Board Exams and make sure that participation in sports is compulsory. Until and unless sports is made compulsory in the educational system which is so examination-oriented it will be very difficult to broad-base sports. There are many schools which do not have playground. We cannot have a single school which does not have a playground to be recognised. If we do these two things, sports will be broad-based.

The second thing is that we need to focus on our elite sportsmen and I do compliment the Government on its top scheme but they need to allocate a lot more funds and to give the opportunity for sportsmen to travel, train, and hire the coaches of their own choice. If we do this, we can, definitely, become a significant player in the Olympics. I know, there is a lot of chatter and this Government particularly is taken in by vanity projects but please do not host the Olympics. I know, this is contrary to what I say. The two countries just similar to us, Greece and Brazil, which conducted the Olympics, faced severe hardships after conducting the Olympics. The Olympics is a great drain. It is better to put the money into development of athletes and not get into eager projects.

Sir, I finally conclude. May the spirit of Olympics ?faster, higher, stronger ? together? prevail. I wish the 117 athletes all the very best.

Thank you, Sir.

SHRI N. K. PREMACHANDRAN (KOLLAM): Thank you, Mr. Chairman Sir, for giving me this opportunity. I also take this opportunity to wish all the best to the Indian contingent which is in Paris. I hope, they come out with flying colours after the Olympics.

Sir, this is an important issue. I think, ?sports and games? is one of the best areas by which we are able to build up our nationhood, unity and integrity of India, beyond all castes, religion, and everything. It is the best way or the medium by which we can build up our nation. But it is quite unfortunate to note that India is the second most populous country in the world and has the lowest rank in terms of medals per capita. It is disappointing that a country that has world-class talent in various disciplines has not been able to produce champions in the area of sports.

Sir, compared to previous years, 2016 witnessed a large participation in Olympics. However, India has been able to bag only two medals. Our performance in Olympics over the past 60 years has shown limited improvements in terms of medals won, peaking only in the London 2012 Olympics. This had been achieved on account of increased investment in the field of sports infrastructure.

Sir, it is astonishing to note that so far, during our past 104 years of Olympics experience, we could only have 35 medals, out of which there are only 23 individual medals and rest of them are team medals. Just now, Mr. Karti Chidambaram has rightly pointed out that a country which is having less than 35 lakh or 40 lakh population is able to bag more medals. We have to take that point into account. We have to introspect ourselves that despite having 1.4 billion population, why we are not able to have a significant mark in international sports and games.

Sir, I would like to place some suggestions. We have to hunt the talented sports personnel from the school days onwards. I would like to quote a document of NITI Aayog. In September 2016, NITI Aayog published a document titled ?Let?s Play?, setting a target of 50 Olympic medals, providing a 20-point action plan, divided into short-term, medium-term and long-term plans.

Sir, now, NITI Aayog?s expectation is that 50 medals will be bagged by our team. This 20-point action plan is divided into short-term, medium-term and long-term plans. So, what preparedness has the Government done for this purpose? The Government has to reply to this.

My suggestion to the Government is that you have to hunt the talented sports personnel from the school days. Moreover, there should be coaching of international standards. I have a suggestion that in each and every Parliamentary constituency, a full-fledged stadium has to be constructed for which all the facilities should be provided. Moreover, the privileges and benefits should be given to sports personnel, thus providing them employment opportunities.

Sir, the last suggestion I would like to make is to depoliticize sports. Who is administering sports in our country? India?s sports administration is dominated by politicians and bureaucrats who have a hegemony to look at, leaving sportspersons? interests to take a secondary place. The latest confrontation in the Wrestling Federation is a typical example of this. So, depoliticize sports; let us have the sportsman spirit in a true sense, so that we can have a long-term plan to achieve in the international arena. With these words, I conclude. Thank you very much.

एडवोकेट चन्द्र शेखर **(**नगीना**) :** माननीय सभापति जी, आपने मेरा नाम आखिरी में लिया है। मैं तो साढ़े तीन घंटे से इंतजार कर रहा था कि मुझे बोलने का अवसर मिलेगा।

माननीय सभापति **:** आप सौभाग्यशाली हैं कि आपको बोलने का अवसर मिल रहा है।

एडवोकेट चन्द्र शेखर **:** महोदय, आप चेयर पर बैठे हैं और हमें बोलने का अवसर न मिले, यह कैसे हो सकता है? आप तो नए मेंबर्स के लिए अवसर पैदा करते हैं।

महोदय, मैं सबसे पहले आपके और इस सदन के माध्यम से पेरिस ओलंपिक खेलों में जाने वाले सभी खिलाड़ियों को बधाई देता हूं, मंगलकामनाएं करता हूं।

18.00 hrs

मैं सरकार का ध्यान इस तरफ आकर्षित करना चाहता हूं कि अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति और पिछड़े वर्ग के खिलाड़ियों के प्रतिनिधित्व पर भी आपको ध्यान देना चाहिए। हम ग्रामीण अंचल से आते हैं, ग्रामीण क्षेत्रों में न तो स्टेडियम्स है, न स्पोर्ट्स कॉलेजेज़ हैं, न यूनिवर्सिटीज़ हैं। प्रतिभा का कोई मोल ही नहीं है। हम खुद अच्छे खिलाड़ी थे, लेकिन अवसर ही नहीं मिला। हमें यहां आने में भी बहुत समय लगा और सड़कों पर संघर्ष करना पड़ा। इसलिए मेरा आपसे आग्रह है कि इन वर्गों का प्रतिनिधित्व बढ़े, इसके लिए सरकार को योजना चलानी चाहिए। अभी क्या योजना है?. ? (व्यवधान)

माननीय सभापति **:** आपकी स्पीच खत्म होने तक सदन की कार्यवाही बढ़ाई जाती है। आपकी स्पीच पूरी होने तक सदन की कार्यवाही चलेगी। अभी 6 बज रहे हैं, अधिकांशत: इस समय तक सदन की कार्यवाही स्थगित हो जाती है, लेकिन आपकी स्पीच शुरू हो गई है तो आपकी स्पीच खत्म होने तक सदन की कार्यवाही बढ़ाई जाती है। कृपया आप अपनी बात पांच मिनट में कन्क्लूड कीजिए।

एडवोकेट चन्द्र शेखर **:** सभापति जी, बहुत-बहुत धन्यवाद। मैं आपके माध्यम से सरकार से जानना भी चाहता हूं कि ग्रामीण अंचल में एससी, एसटी तथा ओबीसी के प्रतिनिधित्व को बढ़ाने के लिए क्या कदम उठाए गए हैं एवं इस संबंध में कुल कितनी धनराशि आवंटित की गई है और कितनी धनराशि आवंटित करने का प्रस्ताव है? क्या उप श्रेणी खिलाड़ियों को पर्याप्त प्रशिक्षण के लिए सरकार द्वारा अलग से कोई प्रशिक्षण केन्द्र स्थापित किया गया

है या किए जाने का प्रस्ताव है? उक्त खेलों में अलग-अलग स्पर्धाओं में उक्त श्रेणी के कुल कितने खिलाड़ियों को भेजे जाने का प्रस्ताव है? इन सब खिलाड़ियों का श्रेणीवार कुल कितना प्रतिनिधित्व रहेगा?

महोदय, अभी हमारे साथी कह रहे थे कि खेल में जाति और धर्म नहीं होता है, लेकिन जाति तो है। बच्चे के नाम के साथ सरनेम लगा होता है और उस देश में जाति न हो, ऐसा कैसे हो सकता है? मुझे आज भी याद है कि जब हिमा दास मेडल लेकर आई थीं तो सबसे पहले उसकी जाति सर्च की गई थी। वंदना कटारिया, जो हॉकी की एक एससी प्लेयर बच्ची है, उसने इतना अच्छा प्रदर्शन किया, फिर भी उसके घर के बाहर उसे बेइज्जत करने का प्रयास किया गया। इसके साथ-साथ साक्षी और विनेश के साथ क्या हुआ, हम लोग यह भी नहीं भूले हैं। ? (व्यवधान)

माननीय सभापति **:** दादा, आप बीच में बोल रहे हैं।

? (व्यवधान)

HON. CHAIRPERSON: Nothing will go on record except the speech of Shri Chandra Shekhar.

? (*Interruptions*) *?* *

एडवोकेट चन्द्र शेखर **:** मान्यवर, आप मेरी तरफ देखिए। मैं जिस क्षेत्र से आता हूं, वह नगीना, सहारनपुर है। मैं उस क्षेत्र के गांवों में जाता हूं। वहां पर बहुत प्रतिभा है, लेकिन अवसर नहीं है। मेरा आपके माध्यम से सरकार से आग्रह है कि वह देखे कि गांव में प्रतिभा की कमी नहीं है और इनको कुचला न जाए, क्योंकि इसमें पक्षपात होता है। इस पक्षपात को खत्म किया जाए। कब तक एकलव्य का अंगूठा कटता रहेगा? अब तो हमें अवसर मिलने चाहिए। मैं आपसे यही कहना चाहता हूं। आपने मुझे मौका दिया, मैं इसके लिए आपका धन्यवाद करता हूं।

माननीय सभापति **:** सभा की कार्यवाही कल मंगलवार दिनांक 23 जुलाई, 2024 को प्रात: 11 बजे तक के लिए स्थगित की जाती है ।

18.02 hrs

The Lok Sabha then adjourned till Eleven of the Clock

on Tuesday, July 23, 2024/ Sravana 1, 1946 (Saka).

_____

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

-

--

-

-

-

-

INTERNET

The Original Version of Lok Sabha proceedings is available on Parliament of India Website and Lok Sabha Website at the following address:

www.sansad.in/ls

LIVE TELECAST OF PROCEEDINGS OF LOK SABHA

Lok Sabha proceedings are being telecast live on Sansad T.V. Channel. Live telecast begins at 11 A.M. everyday the Lok Sabha sits, till the adjournment of the House.

Published under Rules 379 and 382 of the Rules of Procedure and Conduct of Business

in Lok Sabha (Seventeenth Edition)

---

* The sign + marked above the name of a Member indicates that the Question was actually asked on the floor of the House by that Member.

*Available in Master copy of Debate, placed in Library.

? English translation of this part of the speech was originally delivered in Marathi.

? English translation of this part the speech was originally delivered in Punjabi.

* Not recorded.

* Not recorded.